ओ३म्

आर्य सेवक

आर्य प्रतिनिधि सभा म.प्र. व विदर्भ का मुख पत्र

जून-जुलाई २०१४

लोकसभा निर्वाचन 2014 में निर्वाचित आर्य महानुभाव

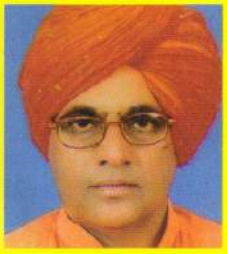

स्वामी सुमेधानन्द जी
(सीकर, राजस्थान)

जन. वी.के.सिंह
(गाज़ियाबाद, उ.प्र.)

डा. हर्षवर्धन
(चान्दनी चौक, दिल्ली)

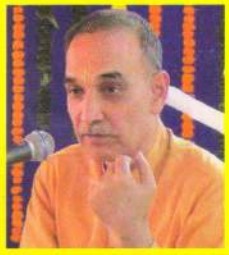

डा. सत्यपाल सिंह
(बागपत उ.प्र.)

श्री अश्विनी चोपड़ा
(करनाल, हरियाणा)

श्री प्रवेश वर्मा
(पश्चिमी दिल्ली)

श्रीमति मीनाक्षी लेखी
(नई दिल्ली)

रमेश विधूड़ी
(दक्षिण दिल्ली)

डा. सुनील गायकवाड़
(लातुर, महाराष्ट्र)

आर्य प्रतिनिधि सभा म.प्र. व विदर्भ के आर्यों, 'सभा' के पदाधिकारियों तथा
'आर्यसेवक' परिवार की ओर से शतशः हार्दिक बधाईयाँ

सभा कार्यालय : दयानन्द भवन, मंगलवारी बाजार, सदर, नागपुर (महाराष्ट्र)

अमृत-प्राप्ति

अभव देव विद्यालंकार

त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् । उर्वारूकमिव बन्धनात् मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ।।

ऋ. ७. ५९.१२ । अथर्व. ३/६०

भावार्थ – (सुगन्धिं) सुष्ठु गन्ध व सौन्दर्य वाले और (पुष्टिवर्धनं) पुष्टि बढ़ानेवाले (त्र्यम्बकं) त्र्यम्बक देव का, संसार के तीनों लोकों के अधिदष्टारूप माता का (यजामहे) हम यजन करते हैं । (बन्धनात् उर्वारूकमिव) जैसे कि लताबंधन से डाली में पका हुआ कर्कटीफल स्वयमेव जुदा हो जाता है वैसे (मरते हुए) हम (मृत्योः) मृत्यु से, मृत्युभय से (मुक्षीय) मुक्त हो जायें, (अमृतात्) अमृत से (मा) कभी नहीं ।

विनय

स्वाभाविक और उचित मृत्यु वह होती है जिस में शरीर इस तरह सहज में छूट जाता है जैसे कि पका हुआ फल डाल से टूट पड़ता है । हम चाहते हैं कि हमारी ऐसी ही मृत्यु हो । पूरा पका हुआ फल अपनी अधिक से अधिक पुष्टि को जो उसे उस वृक्ष से मिल सकती है पा चुका होता है और पकने पर उसमें एक मनोहर सुगंध आ जाती है । तब उस को वृक्ष से जबरदस्ती नहीं जुदा करना होता, वह स्वयमेव आराम से जुदा हो जाता है । हम चाहते हैं कि हमारी इस संसार से जुदाई–हमारी मृत्यु–इसी तरह आराम से स्वाभाविकतया हो । इस प्रयोजन के लिये है भगवन् ! हम तुम्हारा यजन करते हैं । तुम्हारा यजन करने से हम इस संसार वृक्ष पर स्वाभाविकतया पकते जायेंगे । 'सुन्दर गन्ध दाता' और 'पुष्टि के बढ़ाने वाले' के रूप में, हे प्रभो ! हम तुम्हारी उपासना करते हैं । तुम्हारी उपासना से जहाँ हम धीरे–धीरे परिपक्व हो जायेंगे, हममें पूरी पुष्टि आजायेगी, वहाँ हममें परिपक्वता की सुगन्ध व सुन्दरता भी आजायेगी । ओह, इस पकी अवस्था में शरीर को छोड़ना, संसार को छोड़ना, भंयकर व दुःखदायी होने की जगह कैसा स्वाभाविक और शान्तिदायक होगा? लोग मृत्यु से यूँ ही डरते हैं । हे मृत्यु के भी स्वामी देव! ऐसे लोग तुम से भी डरते हैं, तुम्हारे रूद्ररूप से घबराते हैं । पर हे रूद्र ! तुम तो त्र्यंबक हो, तीनों लोको की आंख हो तीनों अवस्थाओं के उत्पत्ति, स्थिति, प्रलय के–अधिद्रष्टा हो । नहीं, यूँ कहना चाहिये कि तुम तीनों लोकों की तीनों कालों में अम्बा हो, माता हो । तुम उत्पत्ति, स्थिति और प्रलय करने वाली हमारी माता हो । जो तुम्हारे केवल प्रलय व संहार रूप को ही देखते हैं, वे ही तुम से, तुम्हारी मृत्यु से घबराते हैं । वे तुम्हारे पुष्टिवर्धक सुन्दर रूप को नहीं देखते, अतएव वे तुम्हारा यजन कर तुम से रस पाकर अपनी परिपक्वता नहीं कर पाते । उन्हें जबरदस्ती संसार से छूटने में–मृत्यु में–बड़ा क्लेश होता है । हे अम्बक ! तुम इसीलिये तो संहार करती हुई भी हमारी माता हो । तुम जब इहलोक रूपी अपनी दायीं गोद से (मृत्यु द्वारा) हमें उठाती हो तो हम बच्चे बेशक रोने लगते हैं कि बस हम गये, हम मरे, पर तब हम नहीं जानते होते कि तुम तुरन्त ही परलोक की अपनी दूसरी गोदी में बैठाने के लिये ही पहिली गोद से हमें उठाती हो । हम तुम्हारे नादान बच्चे तुम्हारी अमृतमय गोदों को भी नहीं पहिचानते। पर हे मातः ! तुम अब हमें ऐसा परिपक्व और सुगन्धियुक्त कर दो कि हम मरते हुए भी तुम्हारी इन अमृतमय गोदों से कभी जुदा न होयें । अब मृत्युभय से तो अवश्य हमारा छुटकारा करो, पर अपनी अमृतगोद से हमें कभी बिछुड़ने न दो । हे मां, अपनी अमृतमय गोद से हमें कभी बिछुड़ने न दो ।

'वैदिक विनय' से साभार

ओ३म

आर्य सेवक

आर्य प्रतिनिधि सभा म. प्र. व विदर्भ का मुखपत्र

वर्ष - ११४ अंक ६-७
सृष्टि संवत १९६०८५३११४
दयानन्दाब्द - १९०
संवत - २०७१
सन् - २०१४ जून व जुलाई

प्रधान
पं. सत्यवीर शास्त्री, अमरावती
मो. नं. ०९४२२१५९८३६

मंत्री एवं प्रबंधक सम्पादक
प्रा. अनिल शर्मा, नागपुर
मो. ०९३७३१२११६४

सम्पादक एवं उपप्रधान
जयसिंह गायकवाड़, जबलपुर
मो. ०९४२४६८५०९१
email : jasysinghgaekwad@gmail.com
निवास - ५८०, गुप्तेश्वर वार्ड, कृपाल चौक,
मदन महल, जबलपुर

सह सम्पादक
पं. सुरेन्द्रपाल आर्य, नागपुर
मो. : ०९९७००८००७४

सह संपादक एवं कार्यालय मंत्री
अशोक यादव, नागपुर
मो. : ९३७३१२११६३

कार्यालय पता :
दयानन्द भवन, मंगलवारी बाजार, सदर,
नागपुर-४४०००१ महाराष्ट्र
दूरभाष क. ०७१२-२५९५५५६

अनुक्रमणिका

क्र.	लेख	लेखक	पृष्ठ
१.	अमृत-प्राप्ति	अभय देव विद्यालंकार	२
२.	सम्पादकीय	जयसिंह गायकवाड़	४
३.	वेदों का महत्व	डॉ. धर्मेन्द कुमार	५
४.	राष्ट्र-पितामह	गोपाल दत्त शर्मा	८
५.	आत्मानुभूति कैसे करें?	स्वामी विष्वङ्	१०
६.	भव्यतम मकान उस पर.....	अशोक आर्य	१३
७.	काव्य जगत 1. राष्ट्र वन्दना - देव नारायण भारद्वाज 2. अभाव सहिष्णुता का - ओमप्रकाश बजाज		१५
८.	आर्य पर्वों की सूची		१६
९.	आर्य जगत के समाचार		१७
१०.	सभा क्षेत्र की सूचनाएं व समाचार		१८

टीप- प्रकाशित कृतियों में व्यक्त विचार लेखकों के हैं इनसे 'आर्य सेवक' का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

सम्पादकीय

अच्छे दिनों ने दस्तक दे दी है

देश में अच्छे दिन आने के संकेत आ रहे थे पर अब तो यह प्रतीत होता है कि ये दिन आ गए हैं । पहले हम सामान्य तौर पर इनके देश के क्षितिज पर आने की चर्चा करेगें और बाद में आर्य समाज में आने के बारे में भी ।

अरसे से देश में तथा कथित धर्म निरपेक्षता की चर्चा सुन सुन कर कान पक गए थे । इसी प्रकार भगवा साम्प्रदायिकता के अनेक नामों से व्यंग पूर्ण फब्तियां से जले पर नमक छिड़कने का कार्य किया जाता रहा है पर अब के दिन लद गए दिखते हैं । इस प्रकार इस प्रवृत्ति का पटाक्षेप होना निश्चय ही प्रसन्नता का प्रसंग है ।

गत दिवसों की गतिविधियों का एक विहंगावलोकन करने पर हम पाते हैं कि देश में कैसा वातावरण था । केवल इंगित रूप में कुछ बातों की ओर ध्यान आकर्षित किया जाता है । विविध क्षेत्रों में भ्रष्टाचार, यथा स्थिति बनाए रखने की प्रवृत्ति, स्वदेश, स्वभाषा, स्वसंस्कृति आदि के प्रति तिरस्कार, अल्प संख्यकों की किसी भी निम्न स्तर तक जाकर तुष्टिकरण की याजनाओं का सूत्रपात जाति, वर्ण व वर्ग के आधार पर विभाजन-जिससे वोट बैंक बना रहे के प्रयास अनवरत रूप से चलते रहे भले ही देश की एक सूत्रता की कितनी भी हानि क्यों न हो जाए, देश की सीमाओं पर हो रही नापाक व लोभहर्षक गतिविधियों को न केवल नजर अन्दाज करना अपितु प्रतिकार करने का हौसला भी प्रदर्शित न करना आदि बाते थीं जिनसे देश के सर्व साधारण व्यक्ति को भी झकझोर दिया था । देश कब तक ऐसी स्थिति को सहन कर सकता था? लोगों के धैर्य रखने की भी सीमा होती है । यह, धैर्य टूटा और अनुकूल वातावरण बनने पर कल्पनातीत रूप से कायापलट हुई जो कि ऐतिहासिक रही न केवल भा.ज.पार्टी को असाधारण बहुमत मिला अपितु कइयों के तम्बू उखड़ गए और कई तो कहीं के भी न रहे ।

देश अब निश्चिन्तता के वातावरण में भविष्य की योजनाओं के बनाने का व क्रियान्वयन कर सकता है साथ ही स्वाभिमान के साथ चलते हुए देश का नव निर्माण प्राचीन भारतीय संस्कृति की पृष्ट भूमि का ध्यान रखते हुए आज के वैज्ञानिक और सूचना प्रौद्योगिकीय सहायता से कर सकता है । अनेक ज्वलन्त समस्याएं है जिनको सुलझाना आवश्यक है इनके सुलझाने के लिए नई सरकार यथोचित प्रयास करेगी ऐसी सभावनाएं दिख रही हैं । जैसे जैसे समस्याएं सुलझेगीं वैसे वैसे अच्छे दिनों का मार्ग प्रशस्त होगा । परिवर्तन का जो मार्ग बना वह सहसा नहीं बना है युग के सूत्रधार तथा नव नियुत प्रधानमंत्री माननीय श्री नरेन्द्र मोदी जी के शब्दों के अनुसार काश्मीर से कन्या कुमारी व अरूणाचल से द्वारका तक जो विजय ध्वज फहराया है उसके पीछे पांच पीढ़ियों के लगातार प्रयासों की श्रंखला के प्रयास हैं। इन प्रयासों का ही सुफल है यह । इसके लिए जहां सर्वसाधारण की भागीदारी श्लाधनीय हैं वहां इनके सूत्रधार भी अभिनन्दनीय हैं। इसी सदर्भ में उपेक्षित राष्ट्रभाषा हिन्दी को उसका यथेष्ट स्थान दिलाने की श्रीमान मोदी जी की पहल निसन्देह सराहनीय है । इस एक कदम से जहां हिन्दी का बोलवाला होगा वहां भारतीय भाषाओं के दिन भी बहुरेगें ।

अब हम आते हैं दूसरे पायदान पर अर्थात आर्यसमाज में अच्छे दिनों की दस्तक की । अभी तक जो समाचार छन छन कर मिले हैं उनके अनुसार स्वामी सुमेधानन्द जी, जनरल वी.के. सिंह, डॉ. हर्षवर्धन, डॉ. सत्यपाल सिंह, श्री अश्विनी चौपड़ा, श्री प्रवेश वर्मा, श्रीमति मीनाक्षी लेखी, श्री रमेश विधूड़ी और डॉ. सुनील गायकवाड़ भाजपा के टिकिटों पर लोक सभा में पहुच चुके हैं । ये प्रायःआर्य विचार धारा के या आर्य पृष्ट भूमि के महानुभाव हैं । आर्य समाज के लिए यह निर्विवाद रूप से गर्व के क्षण हैं । हो सकता है कि यह सूची और लम्बी हो सकती है । एक अनुमान के अनुसार इतनी बड़ी संख्या में आर्यों की लोकसभा में उपस्थिति पहली बार ही हुई हो ।

यह एक स्वर्णिम संधि है । इन महानुभावों की सेवाएं का लाभ अलग अलग रूप से या सम्मिलित रूप से किस प्रकार उठाया जा सकता है यह आर्य श्रेष्टियों पर निर्भर करता है । हमें लाभ उठाना आवश्यक है तभी हम वैदिक विचार धारा के प्रसार व महर्षि के स्वप्नों के संसार का निर्माण कर सकेगें ।

शेष भाग अगले पृष्ठ पर .....

गतांक से आगे

वेदों का महत्व

डॉ. धर्मेन्द्र कुमार

अथर्ववेद का कथन है कि हाइड्रोजन (Hydrogen) से सूर्य को ऊर्जा मिलती है । मन्त्र में हाइड्रोजन के लिए शब्द का प्रयोग है ।

सोमेन-आदित्या बलिनः। अथर्व. १४.२९.२

यजुर्वेद में भी हाइड्रोजन और हीलियम गैस (Helium Gas) का संकेत है । मन्त्र में हाइड्रोजन के लिए 'अप' जल का सार भाग गैसीय रूप शब्द आया है तथा हीलियम (Helium) के लिए **'अपां रसस्ययो रसः'** प्रयोग आता है, अर्थात् जल के सारभाग हाइड्रोजन का भी जो सारभौम अर्थात् उच्चतम स्वरूप है । **'सूर्ये सन्त समाहितम्'** के स्पष्ट किया गया है कि सूर्य में हाइड्रोजन और हीलियम दोनों गैस विद्यमान हैं ।

अपाऽरसम् उद्ववयसं सूर्ये सन्तं समाहितम् ।
अपाऽरसस्य यौ रसस्तं वो गृह्याम्युत्तमम् ।। -यजु.९.३

विज्ञान के अनुसार सूर्य में ९० प्रतिशत हाइड्रोजन और ८ प्रतिशत हीलियम तथा अन्य द्रव्य २ प्रतिशत की सतह का तापमान ६ हजार डिग्री सेन्टीग्रेड है, अन्दर का तापमान लगभग १ करोड़ ३० लाख डिग्री सेन्टीग्रेड है । इस आन्तरिक ताप से हाइड्रोजन हीलियम के रूप में परिवर्तित हो जाता है, इसे Thermo-nuclear Reaction कहा जाता है । गैसों के इन रूपान्तरों के कारण इसको निरन्तर विशाल ऊर्जा प्राप्त होती रहती है । सूर्य को अपनी इस ऊर्जा के लिए प्रति सेकेण्ड ९० लाख द्रव्यमान की आवश्यकता है ।

ऋग्वेद के एक मन्त्र में वर्णन है कि सूर्य के चारों ओर गैस फैली हुई । इस मन्त्र में विशाल गैस के लिए **'शवधूमम्'** महाशक्तियुक्त धूम शब्द का प्रयोग है ।

शकमयं धूमम् आरादपश्यम् । -१.१६४.४३

अथर्ववेद में सूर्य की सात किरणों का उल्लेख मिलता है और कहा गया है कि सूर्य में सभी रंग हैं ।

सप्त सूर्यस्य रश्मयः । -अथर्व. ७.१०७.१.
इन्दे नि रूपा हरिता मिमिक्षिरे । -अथर्व. २०.३०

अथर्ववेद में कहा है कि सूर्य की ७ प्रकार की किरणें ही ३ रूपों, अर्थात् उच्च, मध्य, निम्न रूपों को कर २१ प्रकार की हो जाती हैं । इनमें ही सभी वस्तुओं को रूप-रंग प्राप्त होता है । **ये त्रिषप्ताः परियन्ति विश्वा रूपाणि बिभ्रतः ।**-अथर्व. १.१.१

शेष भाग अगले पृष्ठ पर .....

आर्य समाज नैतिकता तथा सात्विकता का पर्याय माना जाता रहा है । आज दो प्रमुख समस्याएं समाज के सामने है । पहली है युवतियों और विशेष का अवयस्क कन्याओं का देहशोषण तथा उनकी हत्या । कानून तो अपना कार्य करता है पर उसके प्रयास एवं परिणामों से सन्तोष होने का प्रश्न ही नही रह गया है । सामाजिक जाग्रति व भागीदारी से दशा में यथेष्ट सुधार की आशा की जा सकती है । आर्य समाज की कुमार सभाओं, आर्यवीर दलों तथा अन्य युवक संस्थाओं ने चरित्रवान युवक व कार्यकर्ता दिए है । इस सम्बध में इनके माध्यम को सक्रिय करने की आवश्यकता है इससे समाज के समक्ष उदाहरण जाएगा तथा अन्य संस्थाएं भी अनुसरण कर सकेगीं । आर्य समाज को इस तथा दूसरी समस्या-भ्रष्टाचार से मुकाबला करने की चुनौती है । इससे देश के संकट का पहाक्षेप होगा तथा कहा जा सकेगा स्वैर स्वैरिणी कुतः ।

आर्य समाज के और अच्छे दिन लाने के लिए सर्वसाधारण आर्यों, नेताओं, विद्वानों, शिक्षण संस्थाओं में कार्य करने वाले महानुभावों आदि सभी को जागरूक होना होगा । केवल इंगित रूप में कुछ कहना चांहूगा । आर्य समाज के सक्रिय होने तथा प्रचार प्रसार से कई दुकानों के बन्द होने की सभावना रही आती है विघ्नतोषी लोगों की नजर आर्य समाज पर रहना स्वाभाविक है । प्रवाह में एक तरंग उपर रहती है जो दिखलाई पड़ती है । उसका मुकाबला सरलता से किया जा सकता है पर जो अन्दर की तरंग है उससे बचाव करना परिश्रम साध्य है । उससे मुकाबला करने के लिए हमारी तैयारी है ऐसा दिखलाई नहीं पड़ता है । अतः आपसी मतभेदों को हमें भुलाना होगा। इस से आर्य समाज को अपूर्णीय क्षति हुई है । जब जगे तभी सबेरा । समय की मांग है हमें उठ खड़े होना पड़ेगा । जीवन अपर्ण करना होगा । डा. धर्मवीर जी के शब्दों में कहा जाए तो ''जीवन अपर्ण करने से ही जीवन का अवसर मिलता है । विचारों के साथ ही जीने मरने की शपथ तो हमें ही लेनी होगी''।

जयसिंह गायकवाड़

.....***.....

विश्वा रूपाणि जनयन् युवा कविः । -अथर्व.

यजुर्वेद में सूर्य के लिए कहा गया है कि प्राणशक्ति अर्थात् आक्सीजन (Oxygen) देता है, अपान अर्थात् कार्बन डाइआक्साइड (Carbon dioxide) को समाप्त करता है ।

अन्तश्चरित रोचनास्य प्राणादपानती । -यजु. ३-७

ऋग्वेद में कहा गया है कि सूर्य में अक्षय धन है । वह सारे संसार को निरन्तर भोजन देता है अर्थात् सूर्य की ऊर्जा से ही उत्तम कृषि और अन्न होता है ।

अप्सु सूर्य महद् धनम् । -ऋग्. ८.६८.९

अधारयद् हरितोर्भूरि भोजनम् । -ऋग्. ३.३३.३

सूर्य आकर्षण शक्ति (Magnetism) का वर्णन करते हुए कहा गया है कि सूर्य ने आकर्षण शक्ति युक्त किरणों से पृथिवी को रोका हुआ है । अन्य मन्त्र में सूर्य की आकर्षणयुक्त किरणों के लिए यन्त्र शब्द का प्रयोग है ।

दाधर्थ पृथिवीम् अभितो मयूखैः । -यजु ५.१६

सविता यन्त्रैः पृथिवीम् अरम्णात् । -ऋग्. १०.१४९.१

ऋग्वेद के एक मन्त्र में उल्लेख है कि सूर्य अपनी आकर्षण शक्ति (Magnetism) से सारे संसार को रोके हुए है ।

एको अन्यच्चकृषे विश्दम् आनुषक् ।। -ऋग्. १.५२.१४

ऋग्वेद में ही अन्यत्र कहा गया है कि आकर्षण शक्ति से ही देवों ने द्युलोक, पृथिवी, अन्तरिक्ष और नक्षत्रों आदि को रोका हुआ है । मन्त्र में आकर्षण शक्ति के लिए ओजस् (तेज, Magnetic Power) शब्द का प्रयोग है ।

स्वर्णरम् अन्तरिक्षाणि रोचना,

द्यावापृथिवी पृथिवीं स्कम्भुरोजसा । -ऋग्. १०.६५.४

है कि मैटर (Matter) अर्थात् द्रव्य को ऊर्जा (Energy)में परिवर्तित किया जा सकता है और ऊर्जा को द्रव्य के रूप में । वेद में द्रव्य के लिए अदिति (अक्षय प्रकृति) शब्द आया है और ऊर्जा के लिए 'दक्ष' (चेतना, ऊर्जा) शब्द । मन्त्र का कथन है कि अदिति से दक्ष अर्थात् द्रव्य से ऊर्जा की उत्पत्ति हुई और दक्ष से अर्थात् ऊर्जा से द्रव्य की ।

अदितेर्दक्षो अजायत, दक्षातु-अदितिःपरि ।-ऋग्. १०.७२.४

ऋग्वेद और अथर्ववेद में भूमि के चारों ओर विद्यमान ओजोन (Ozone) शब्द आया है और उसे स्थविर अर्थात् स्थूल या मोटी परत कहा है । अथर्ववेद में इस ओजोन का रंग हिरण्य अर्थात् सुनहरी बताया गया है । उल्ब शब्द गर्भस्थ शिशु के ऊपर ढकी हुई झिल्ली के लिए आता है । यहाँ पर पृथ्वीरूपी शिशु की रक्षा के लिए ओजोन की परत को महान् और स्थूल उल्ब कहा गया है ।

महत् तदुल्ब स्थविरं तदासीद्, येनाविष्टतः

प्रविवेशिथापः । -ऋग्. १०.५१.१

तस्योत जायमानस्य-उल्ब आसीद् हिरण्ययः । -अथर्व ४.२.८

ऋग्वेद में गैसों (Gases) के लिए मरूत् शब्द का प्रयोग है। इनकी संख्या ७ X ७ बताई गई है और इन्हें बहुत शक्तिशाली कहा गया है । इनके विषय में कहा गया है कि इनमें से हर एक की अनन्त शक्ति है ।

सप्त मे सप्त शाकिन एकमेका शता ददुः।-ऋग् ५.५२.१७

यजुर्वेद में इन मरूतों अर्थात् गैसों के नाम और उनकी विशेषताओं का भी उल्लेख है । कुछ नाम ये हैं-शुक्रज्योति, चित्रज्योति, सत्यज्योति, ज्योतिष्मान्, सत्यजित्, सेनजित, सुषेण आदि ।

शुक्रज्योतिश्च चित्रज्योतिश्च ज्योतिष्माश्च ।

-यजु. १७.८० से ८५

रसायनशास्त्र से सम्बद्ध भी कुछ तथ्य प्राप्त होते हैं । जल के विषय में कहा गया है कि जल में अग्नि और सोम अर्थात् आक्सीजन और हाइड्रोजन दोनों तत्व विद्यमान हैं ।

अग्नीषोमौ बिभर्ति-आप इत् ताः ।-अथर्व. ३.१३.५

अग्नि को जल का पित्त बताया गया है । इसका अभिप्राय यह है कि जल के मन्थन से अग्नि अर्थात् विद्युत् (Electricily) की उत्पत्ति होती है ।

अग्ने पित्तम अपाम् असि ।-अथर्व. १८.३.५

यजुर्वेद में भी इसी तथ्य का वर्णन करते हुए कहा गया है कि अथर्वा ऋषि ने जल के मन्थन से अग्नि अर्थात् विद्युत् को उत्पन्न किया था ।

त्वामग्ने पुष्करादध अथर्वा निरमन्थत । -यजु. ११-३२

ऋग्वेद का कथन है कि जल से ही सृष्टि हुई है ।

विश्वस्य स्थातुर्जगतो जनित्रीः ।-ऋग्. ६.५०.७

जल के विषय में कहा गया है कि इसमें सारे देव अर्थात् सारे तत्व विद्यमान हैं ।

यत्र देवाः समगच्छन्त विश्वे । -ऋग्. १०.८२.६

वनस्पति विज्ञान की दृष्टि से भी कुछ महत्वपूर्ण तथ्य प्राप्त होते हैं । अथर्ववेद में क्लोरोफिल का वर्णन मिलता है । इसमें क्लोरोफिल (Chlorophyll) के लिए अवि (रक्षक तत्व) शब्द आया है । इसकी विशेषता बताई गई है कि इसके कारण ही वृक्ष-वनस्पतियों में हरियाली रहती है ।

अविर्वै नाम देवतर्त नास्ते परीवृता ।

तस्या रूपेण इमे वृक्षा हरिता हरितस्त्रजः।। अथर्व. १०.८.३१

महद् ब्रह्म येन प्राणन्ति वीरूधः। अथर्व. १.३२.१

अथर्ववेद का कथन है कि वृक्ष खड़े-खड़े सोते हैं, वे जीवित व्यक्ति के तुल्य कार्य करते हैं ।

अस्थुर्वृक्षा ऊर्ध्वस्वप्नाः। अथर्व. ६.४४.१

सामवेद के एक मन्त्र में उल्लेख है कि वृक्ष-वनस्पतियाँ निरन्तर आक्सीजन (Oxygen) छोड़ते हैं । मन्त्र में आक्सीजन के लिए समान वायु का उल्लेख है ।

तमित् समान् वनिनश्च वीरूधोऽ

न्तर्वतीश्च सुवते च विश्वहा । -साम. १८२४

यान्त्रिकी (Engineering) की दृष्टि से भी कुछ मन्त्र बहुत महत्वपूर्ण हैं । ऋग्वेद में वर्णन है कि अश्विनीकुमारों का रथ मन की गति के तुल्य वेग से उड़ सकता था और उसमें सुरक्षा के सैकड़ों साधन लगे हुए थे । वह एक लोक से दूसरे लोक तक जा सकता था ।

वां रथो मनोजवा इयर्ति तिरो रजांस्याश्विना शतोतिः ।
-ऋग्. ७.६८.३

अश्विनीकुमार के रथ अर्थात् विमान के लिए कहा गया है कि वह द्युलोक और पृथिवी में सब जगह जाता है ।

रथो ह वामृतजा अद्रिजूतः परि द्यावापृथिवी याति सद्यः ।
-ऋग्. ३.५८.८

अश्विनीकुमारों के विमान (रथ) का नक्शा दिया गया है कि वह त्रिकोण था । उसमें तीन आसन (Seats) थे और तीन पहिए थे ।

त्रिवन्धुरेण त्रिवृता रथेन त्रिचक्रेण सुवृता यातमर्वाक् ।
-ऋग्. १.११८.२

आयुर्वेद की दृष्टि से वेदों में अत्यन्त महत्वपूर्ण सामग्री उपलब्ध है। इनमें सूर्यकिरण चिकित्सा, वायु-चिकित्सा, अग्निचिकित्सा, शल्यचिकित्सा, विष-चिकित्सा, पशुचिकित्सा, विविध रोग-चिकित्सा आदि का विस्तृत वर्णन प्राप्त है । इनका विस्तृत वर्णन मैंने **'वेदों में आयुर्वेद'** ग्रन्थ में दिया है ।

शल्य-चिकित्सा की अतिश्रेष्ठ पद्धति का उल्लेख ऋग्वेद, अथर्ववेद और जैमिनीय ब्राह्मण में मिलता है । इनको मधुविद्या, अपिकक्ष्य विद्या और प्रवर्ग्य विद्या कहते थे । जैमिनीय ब्राह्मण में मधुविद्या और प्रवर्ग्य विद्या का उल्लेख मिलता है । प्रवर्ग्य विद्या को अपिकक्ष्य विद्या भी कहा जाता था । मधुविद्या में रसायन-शास्त्र, संधान-शास्त्र में टूटे अंगों को जोड़ने की विधि आती है । मृतसंजीवनी में मृत व्यक्ति को पुनर्जीवित करने की विधि बताई गई है । प्रवर्ग्य विद्या और अपिकक्ष्य विद्या में किसी के सिर को काटकर अलग रखना और किसी दूसरे जीव का सिर उसके स्थान पर धड़ में जोड़ देने की विधि है ।

ऋग्वेद के एक मन्त्र में मधुविद्या और अपकक्ष्य विद्या का उल्लेख है । इन्द्र ने ये विद्याएँ दधीचि को दी और दधीचि ने इन विद्याओं का ज्ञान अश्विनीकुमार को दिया ।

आथर्वणायाश्विना दीधचेऽश्व्यं शिर प्रत्यैरयतम् ।
स वां मधु प्रवोचद् ऋतायन् त्वाष्ट्रं यद् दसवपिकक्ष्यं वाम्।
-ऋग्. १.११७.२२

ऋग्वेद में शल्य क्रिया (Surgery) के कतिपय चमत्कारों का भी उल्लेख है, जैसे-

१. अन्धे को दृष्टि-दान ।
२. बहरे को श्रवणशक्ति-दान ।
३. वृद्ध को युवा बनाना ।
४. शरीर के टूटे अंगों को जोड़ना ।

वेदों में प्राकृतिक चिकित्सा का बहुत उल्लेख है । सूर्यकिरण-चिकित्सा (Chromopathy) के विषय में कहा गया है कि उदय होते हुए सूर्य के सामने बैठने से हृदय की सभी बीमारियाँ दूर होती हैं और शरीर में खून की कमी दूर होती है ।

उद्यन्नद्य मित्रमह, आरोहन्, उत्तरां दिवम् ।
हृद्रोगं मम सूर्य, हरिमाणं च नाशय।।-ऋग्. १.५०.११

उदय होते हुए सूर्य की किरणों को सभी रोगों का इलाज माना गया है और कहा गया है कि इन किरणों के सेवन से मनुष्य मृत्यु को जीत लेता है ।

उद्यन्त सूर्यो नुदतां मृत्युपाशान् ।-अथर्व. १७.१.३०

वेदों में पर्यावरण की सुरक्षा पर बहुत बल दिया गया है । वृक्ष-वनस्पतियों को जीवन का रक्षक बताया गया है । पृथिवी, जल और वायु आवश्यक हैं, उसी प्रकार वृक्ष और वनस्पति भी जीवन के अनिवार्य अंग हैं । अथर्ववेद में उल्लेख है कि जीवन के लिए जल, वायु और वृक्ष-वनस्पति अनिवार्य हैं ।

त्रींणि छन्दांसि कवयो वि येतिरे, पुरूरूपं दर्शतं विश्वचक्षणम् ।
आपो वाता ओषधयः, तान्येकस्मिन् भुवन आर्पितानि ।।
-अथर्व. १८.१.१७

वृक्ष-वनस्पतियों के लिए कहा गया है कि इनसे मनुष्य को आक्सीजन प्राप्त होता है और उससे ऊर्जा की प्राप्ति होती है ।

वीरूधो वैश्वदेवीः उग्राः पुरूषजीवनी ।-अथर्व

ओषधियों और वनस्पतियाँ मानवमात्र की रक्षक इन्हें माता कहा गया है ।

ओषधीरिति मातरः तद् वो देवीरूप ब्रुवे ।-ऋग्. १८.९७.४

वृक्ष-वनस्पतियाँ वस्तुतः भगवान् रूद्र के रूप हैं । विष पीती हैं और अमृत उगलती हैं । ये कार्बन-डाइआ. (Carbon di oxide) रूपी विष पीते हैं और आक्सीजन (Oxygen) रूपी अमृत उगलते हैं । यह है विषपान और अमृतदान । इसीलिए यजुर्वेद के १६वें मन्त्र में रूद्र को वृक्षों का स्वामी, वनों का स्वामी, गुल्मों का कहा है ।

वृक्षाणां पतये नमः ओषधीनां पतये नमः ।
वनानां पतये नमः, कक्षाणां पतये नमः ।
नमो वृक्षेभ्यो हरिकेशेभ्यः । -यजु. १६.१७

ऋग्वेद में वृक्षों को काटने पर निषेध है । कहा कि वृक्ष प्रदूषण को रोकते हैं, अतः इन्हें मत काटो ।

मा काकम्बीरम् उद्वृहो वनस्पतिम्,
अशस्तीर्वि हि नीनशः । -ऋग्.

अथर्ववेद में स्पष्टरूप से कहा गया है कि पृथिवी हृदय को, मर्मस्थलों को, चोट न पहुँचाओ । जितना पृथिवी को खोदकर जल, तेल आदि निकालते हैं, उतना क्षतिपूर्ति भी करें ।

यत् ते भूमे विखनामि, क्षिप्रं तदपि रोहतु ।
मा ते मर्म विमृग्वरि, मा ते हृदयमर्पिपम् ।-अथर्व. १२.२६.३५

अथर्ववेद और मैत्रायणी संहिता आदि में स्पष्ट दिया गया है

राष्ट्र-पितामह स्वामी दयानन्द सरस्वती

महर्षि दयानन्द वैचारिकी गोपाल दत्त शर्मा

(महर्षि दयानन्द सरस्वती को १९०वीं जयन्ती की अवसर पर दिए गये भाषण का संक्षिप्त रूपान्तर)

स्वामी दयानन्द सरस्वती का मानव जाति को सबसे बड़ा योगदान है, अज्ञान के अंधकार से मुक्ति । उन्होंने भारत की जनता को अंधविश्वास की बेड़ियों से मुक्त करके उनमें एक नई चेतना का संचार किया, जो भारत में सामाजिक उन्नति की प्रेरक और बाद में भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन की सबसे महत्वपूर्ण नींव का पत्थर साबित हुई ।

बृहदारण्यक उपनिषद के अनुसार एक पूर्ण सन्यासी जब ब्रह्म को जान लेता है तो पूर्ण रूप से भय से रहित हो जाता है । स्वामी दयानन्द ने ब्रह्म को जान लिया था इसलिए वे पूर्ण रूप से निर्भय थे । ईश्वरीय ज्ञान जनित स्वात्विक निर्भयता ही वास्तव में मनुष्य को स्वतंत्र करती है । स्वामी दयानन्द वास्तव में पहले भारतीय थे जिन्होंने सदियों की अज्ञानता और अंधकाररूपी दासता की बेड़ियों को काटकर फेंकने के लिए भारत का नेतृत्व किया ।

स्वामी दयानन्द जी का मानना था कि धर्म का उद्देश्य मनुष्य को सुखी करना है, दुखी करना नहीं । धर्म सभी मनुष्यों को एक सूत्र में बांधने का साधन है, विभाजित करने का नहीं । धर्म मनुष्य की उन्नति का साधन है, उसकी अवनति का नहीं । धर्म मुक्ति का साधन है, बंधन का नहीं । स्वामी जी का मानना था कि विशुद्ध ईश्वरीय ज्ञान मनुष्य को बंधनों से मुक्त करता है और मनुष्य को अपनी और समाज की उन्नति की ओर प्रेरित करता है । उनके विश्वास में भारत की सामाजिक अवनति और पराधीनता के मूल में धार्मिक अज्ञान और अंध विश्वास ही था ।

स्वामी दयानन्द ने भारत में एक वैचारिक क्रांति का शंखनाद किया,

शेष भाग अगले पृष्ठ पर .....

कि हम पृथिवी, जल और वृक्ष-वनस्पति को दूषित न करें और उन्हें हानि न पहुँचावें ।

मा-अपो हिंसीः, मा-ओषधीर्हिंसीः। -यजु. ६.२२

द्यां मा लेखीः, अन्तरिक्षं मा हिंसीः। -यजु. ५.४३

पृथिवीं दृंह, पृथिवीं मा हिंसीः। मैत्र.

वेदों में जहाँ ज्ञान और विज्ञान की बातों का वर्णन है वहीं विश्वशान्ति, विश्वबन्धुत्व, विश्वकल्याण, राष्ट्रीय उन्नति, सामाजिक उन्नति, अर्थिक समृद्धि और पारिवारिक सौम्य आदि का भी प्रमुख वर्णन है ।

ऋग्वेद का कथन है कि हमारे सभी मनुष्य आदि नीरोग और स्वस्थ हों ।

द्विपाद् चतुष्पाद् अस्मांक सर्वमस्तु अनातुरम् ।-ऋग्.

अथर्ववेद का कथन है कि इस पृथिवी पर कोई भी प्यासा न रहे ।

एष वां द्यावापृथिवी उपस्थे, मा क्षुधत् मा तृषत् ।-अथर्व.

अथर्ववेद का कथन है कि संसार के सभी मनुष्यों का कल्याण हो।

स्वस्ति गोभ्यो जगते पुरूषेभ्यः । -अथर्व.

यजुर्वेद का कथन है कि प्रत्येक स्वतन्त्र राष्ट्र में जनता का कल्याण हो । इससे आगे हम विश्वहित और विश्वकल्याण का कार्य करें ।

स्वराज्य स्थ राष्ट्रदा राष्ट्रममुष्मै दत्त ।

जनभृतं स्थ राष्ट्रदा राष्ट्रं दत्त ।

विश्वभृत स्थ राष्ट्रदा राष्ट्रं मे दत्त । -यजु.

यजुर्वेद में स्पष्ट रूप से उल्लेख है कि वेदों का ज्ञान मानवमात्र के लिए है । ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र सभी के लिए यह वेदों का ज्ञान है ।

यथेमां वाचं कल्याणीमावदानि जनेभ्यः ।

ब्रह्मराजन्याभ्यां शूद्राय चार्याय च स्वाय चारणाय च ।

-यजु.२६.२

राष्ट्रीय उन्नति सबका कर्त्तव्य है । इसके लिए बलिदान होने को उद्यत रहें । पृथिवी हमारी माता है, हम इसके पुत्र हैं । पुत्रवत् मां के यश की वृद्धि करें यह हमारा कार्य है ।

वयं राष्ट्र जागृयाम पुरोहिताः । -यजु.

माता भूमिःपुत्रो अहं पृथिव्याः । -अथर्व.

अन्त में मैं उन सभी भारतीय एवं पाश्चात्य मनीषियों को अपनी श्रद्धाञ्जलि अर्पित करता हूँ, जिन्होंने वेदों के उद्धार के लिए अपना जीवन अर्पित किया है । जनता-जनार्दन से निवेदन करना है कि वह अपनी उन्नति और विश्वहित के लिए वेदों का स्वाध्याय अवश्य करें । वेदों के स्वाध्याय से जीवन पवित्र और उन्नत होगा ।

सचिव, दिल्ली संस्कृत अकादमी, दिल्ली सरकार
चलभाष - ९९९४२६४७४

.....***.....

जो हजारों साल से राजनैतिक और वैचारिक रूप से परतंत्र भारत में एक नई रोशनी की तरह आई । यह ऐसा युग था जब हिन्दु समाज वेदों में वर्णित विशुद्ध ईश्वरीय ज्ञान और वेदों पर आधारित अपने गौरवमय धर्म के स्वरूप को भूल चुका था और जीवन के हर क्षेत्र में अंधविश्वास, कर्म कांड कुरीतियों और ग्रह-नक्षत्रों के हस्तक्षेप ने भारतीय मानस को बुरी तरह जकड़ा हुआ था । भारतीय मानस ने अपनी हीन अवस्था को इन ग्रह दशाओं पर आधारित अपनी नियति मान लिया था । धर्म के नाम पर इन कुरीतियों की जड़ अत्यंत प्रबल और गहरी थी तथा मनुष्य के जीवन के हर पहलू पर इनकी पकड़ थी । अनेक अंधविश्वासों, कर्म-कांडों और प्रपंचों में फंसे, भूत-प्रेतों, ग्रह-गोचर, दिशा-शूलों के बंधन में फंस कर उनका विवेक नष्ट हो गया था और सही गलत का विवेचन करने की दृष्टि समाप्त हो गयी थी । सदियों की पराधीनता और पराभव के पीछे भारतीयों की यही मानसिकता जिम्मेदार थी ।

विशेष बात यह है कि यह सब वैदिक धर्म के नाम पर हो रहा था, क्योंकि पाणिनीय व्याकरण और वेदों को समझने वाले बहुत कम विद्वान थे तथा वेदों की शिक्षा से रहित पण्डे, पुजारी, वेद मन्त्रों की अनर्गल व्याख्या करके जनसाधारण को भरमाए हुए थे । धर्म भोले-भाले लोगों को ठगने और उनके शोषण का मार्ग बन गया था । स्वामी जी ने यह पहचान लिया कि इस वर्ग पर अपनी विद्वत्ता, शास्त्र ज्ञान और प्रचंड तेज से ही हावी हुआ जा सकता है, क्योंकि ब्राह्मण पुजारी वर्ग ने वेदों और धर्म शास्त्रों की गलत और अनर्गल व्याख्या करके ही इस देश की जनता को मूर्ख बनाया हुआ था । वेदों की सही और तर्क पूर्ण व्याख्या करके इनकी पोल खोली जा सकती थी । स्वामी दयानन्द ने सत्य के प्रतिपादन में किसी के विरोध और निंदा की परवाह नहीं की । उन्होंने अनेक मोर्चों पर एक साथ लड़ाई लड़ी, जिनमें उनके सबसे प्रबल शत्रु वही थे, जो वेद शास्त्रों के नाम पर अपनी जीविका चला रहे थे ।

स्वामी जी ने ज्ञान और तर्क को अपना शस्त्र बनाया और पूरे देश में भ्रमण के लिए निकल पड़े । उन्होंने गुजरात से बंगाल तक और हिमालय से तक सभी सम्प्रदायों के विद्वानों से शास्त्रार्थ करके उन्हें परास्त किया और अंधविश्वास और अज्ञान की जड़ों को खोद डाला। स्वामी जी ने हरिद्वार के कुंभ मेले में, जहां-असंख्य विद्वान, सभी पंथों के साधु-संन्यासी और अनेक धर्म ध्वजी, पाखंडी, एकत्रित हुए थे, पाखंड-खंडिनी पताका फहरा कर, हिन्दु धर्म में व्याप्त सभी बुराइयों को एक स्वर में चुनौती दे डाली । स्वामी दयानन्द ने सत्य के प्रतिपादन में किसी के विरोध और निंदा की परवाह नहीं की । वे इस कार्य में नितांत अकेले थे, और उनके दुश्मन थे करोड़ों की संख्या में । किंतु संस्कृत, व्याकरण और वेद शास्त्रों के ज्ञान में स्वामी जी का कोई सानी नहीं था और इसीलिए प्रतिद्वन्द्वी इनके सामने नहीं टिक पाए ।

यह स्वामी जी की प्रखर तर्क शक्ति, प्रचंड तेज और सत्य के प्रति अनन्य निष्ठा ही थी जिसने सत्य की आवाज को सभी दिशाओं, में उद्घोषित किया और जो उनके सामने आया, नतमस्तक हुआ । उनके गुरू स्वामी विरजानंद ने उनसे यह गुरूदक्षिणा मांगी थी कि वे वैदिक शिक्षा से भारत को प्रकाशित करें और अज्ञान के अंधकार को दूर करें। इस वचन को पूरी तरह पालन करते हुए भारत को अज्ञान और अंधविश्वास की मानसिक गुलामी से मुक्त कराने निकल पड़े । स्वामी जी ने वेदों और उपनिषदों को अपनी जीवन में आत्मसात कर लिया था और बृहदारण्यक उपनिषद के

असतो मा सद्गमय । तमसो मा ज्योतिर्गमय ।
मृत्योर्मामृतं गमय ।।

बताये मार्ग पर आजन्म चलते रहे । उन्होंने असत्य के विरूद्ध प्रचंड युद्ध का शंखनाद किया । जीवन भर अज्ञान और अधंविश्वास के अंधकार के विरूद्ध लड़ते रहे और सत्य का प्रतिपादन करते रहे । उनकी सत्य में अपरिमित आस्था थी और इसीलिए अपने आध्यात्मिक उत्कर्ष के साथ उन्हें अपने सामाजिक दायित्व का भी भान था । वे मृत्यु पर्यंत देश के धार्मिक, सामाजिक, राजनैतिक और सांस्कृतिक उद्धार के लिए लड़ते रहे । उन्होंने अपने ईश्वरीय ज्ञान से भारतीयों को सत्य से परिचय कराया और अज्ञान जनित भय से मुक्त कराने की कोशिश की । उनके हृदय में आदर्शवाद की उच्च भावना और अपनी मातृभूमि की नियति को बदलने की अदम्य उत्कंठा थी । बुद्धिवाद की जो मशाल स्वामी दयानन्द ने जलाई उसकी ज्योति आज भी विश्व को प्रकाशित कर रही है । 'कृण्वतो विश्वं आर्यम्' के उद्घोष के साथ जिस प्रचंड आंदोलन की शुरूआत उत्तर भारत में स्वामी दयानन्द ने की, वह आधुनिक हिन्दु विचारधारा की सबसे प्रबल लहर थी, जिसे अंग्रेजी शासकों ने 19वीं शताब्दी का सबसे प्रबल आन्दोलन बताया ।

मनीषियों ने आधुनिक भारत के निर्माताओं में स्वामी दयानन्द को मुख्य स्थान दिया है । स्वामी विवेकानन्द ने कहा है कि बंगाल में ब्रह्म समाज और उत्तर में आर्य समाज न होता तो शायद भारत से हिन्दु धर्म उठ जाता । स्वामी दयानन्द के व्यक्तित्व के प्रभाव से आर्य समाज सबसे शक्तिशाली धार्मिक और सामाजिक सुधार आन्दोलन बना तथा आर्य समाज ने राष्ट्रवादी विचारधारा को आगे बढ़ाने में अनन्य योगदान दिया । पराधीन

आध्यात्मिक चिन्तन के क्षण.....

आत्मानुभूति कैसे करें?

स्वामी विष्वङ्

प्रत्येक आध्यात्मिक व्यक्ति योगाभ्यास के माध्यम से आत्मानुभूति करना चाहता है । इसीलिए योगाभ्यासी योग को अपने जीवन का अंग बना लेता है । योग को जीवन का अंग बनाकर भी योग से कुछ दूर रहता है अर्थात् योग को जीवन का अंग तो बनाता है परन्तु योग के किसी एक विभाग को या दो विभागों को अथवा तीन विभागों को अपनाता है । केवल एक, दो या तीन विभागों को अपनाने मात्र से योगाभ्यास पूर्ण नहीं होता है, किन्तु बारी-बारी से योग के सभी (आठों) अंगों को अपनाना चाहिए । कोई योग के अंगों में से केवल आसन को अपनाता है, कोई आसन व ध्यान को अपनाता है, कोई प्राणायाम को अपनाता है, कोई स्वाध्याय को तो कोई ईश्वर समर्पण को अपनाता है । इस प्रकार एक, दो या तीन अंगों को अपना कर चलने मात्र से आत्मानुभूति नहीं हो सकती है । इसीलिए यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान और समाधि इन सभी योग के अंगों का अनुष्ठान (पालन) करने पर ही आध्यात्मिक व्यक्ति को आत्मानुभूति होगी । प्रायः आध्यात्मिक व्यक्ति प्रातःकाल व सायंकाल ध्यान करता है । ध्यान के काल में आत्मानुभूति (आत्म साक्षात्कार) के लिए संघर्ष करता रहता है । मन को आत्मा (परमात्मा) में एकाग्र करने के लिए पुरूषार्थ करता है, परन्तु मन आत्मा में एकाग्र नहीं हो पाता है । मन आत्मा में एकाग्र क्यों नहीं हो पा रहा है इसका यदि विश्लेषण किया जाये, तो निश्चित रूप से कारणों का बोध हो जाता है । जिन कारणों से मन एकाग्र नहीं हो रहा हो उन कारणों को जान कर-समझ कर उनको दूर किया जाये, तो निश्चित रूप से मन आत्मा में एकाग्र हो जायेगा । साधक जितना पुरूषार्थ ध्यान के काल में मन को आत्मा में एकाग्र करने के लिए करता है यदि उतना पुरूषार्थ व्यवहार काल में कर लेता है, तो मन को आत्मा में एकाग्र करने के लिए ध्यान काल में उतना पुरूषार्थ की अपेक्षा नहीं रहेगी । सरलता से, कम से कम पुरूषार्थ से मन आत्मा में एकाग्र हो जायेगा । व्यवहार काल के उत्तम बनने के पीछे पुरूषार्थ जुड़ा हुआ है । व्यवहार काल में क्या पुरूषार्थ किया जाता है, जिससे ध्यान काल में मन एकाग्र हो सकता है? इसका समाधान यह है कि साधक व्यवहार काल में जिसे किसी (मनुष्य अथवा मनुष्येतर पशु आदि) से भी व्यवहार करे तो आत्मीयता (अपनेपन) से व्यवहार करे अर्थात् प्राणी मात्र के प्रति वैर-द्वेष-ईर्ष्या भाव को त्याग करते हुए व्यवहार करे । जिससे सब के साथ उत्तम व्यवहार करने से मन प्रसन्नता रहेगी, मन शान्त रहेगा, मन में द्वेष-ईर्ष्या-वैर वाले कोई भाव-विचार उत्पन्न नहीं होंगे । ऐसी स्थिति में मन आत्मा में एकाग्र हो

शेष भाग अगले पृष्ठ पर .....

भारत में यह कहने का साहस सर्वप्रथम स्वामी दयानन्द ने ही किया- 'आर्यावर्त, आर्यावर्त वासियों का है और विदेशी शासन चाहे कितना भी अच्छा हो, वह देश का सबसे बड़ा दुर्भाग्य है।'

स्वतंत्रतापूर्व काल में हिंदू समाज के नवजागरण और पुनरूत्थान आंदोलन के रूप में आर्य समाज सबसे शक्तिशाली आंदोलन था। स्वराज और स्वदेशी आंदोलनों की नींव स्वामी दयानन्द के उपदेशों में ही पड़ी ।

आर्य समाज ने राष्ट्रवादी विचारधारा को आगे बढ़ाने में अनन्य योगदान दिया । आर्य समाज के प्रभाव से कांग्रेस में स्वदेशी आंदोलन आरंभ हुआ । स्वतंत्रतापूर्व काल में हिंदू समाज के नवजागरण और पुनरूत्थान आंदोलन के रूप में आर्य समाज सबसे शक्तिशाली आंदोलन था ।

आर्य समाज, शिक्षा, समाज सुधार और राष्ट्रीयता का आंदोलन था । जिसने स्वतंत्रता संग्राम में अग्रणी भूमिका निभायी। आर्य समाज ही है जिसने बुद्धिवाद की एक मशाल भारत में जलाई, उससे हिंदू नवोत्थान पूरे प्रकाश में आया । इसीलिए डा. पट्टाभिसितारमैया ने कहा था- ''महात्मा गांधी राष्ट्रपिता हैं पर स्वामी दयानन्द भारत के राष्ट्रपितामह हैं ।''

मुख्य वाणिज्य प्रबंधक
प.म.रे. प्रबंधक, जबलपुर

.....***.....

आर्यो! अपने घर की रक्षा करो

देखो, तुम्हारे सामने पाखण्ड मत बढ़ते जाते हैं । ईसाई मुसलमान तक हो जाते हैं । तनिक भी तुमसे अपने घर की रक्षा और दूसरों को मिलाना नहीं बन सकता । बने तो तब, जब तुम करना चाहो । जब लों वर्तमान और भविष्य में उन्नतिशील नहीं होते तब लों आर्यावर्त और अन्य देशस्थ मनुष्यों की वृद्धि नहीं होती । जब वृद्धि के कारण वेदादि सत्य शास्त्रों का पठन-पाठन ब्रह्मचर्यादि आश्रमों के यथावत् अनुष्ठान और सत्योपदेश होते हैं, तभी देशोन्नति होती है ।

महर्षि दयानन्द सरस्वती

जायेगा । मन के एकाग्र होते ही आत्मानुभूति की स्थिति उत्पन्न होती है ।

ध्यान के काल में मन को एकाग्र करने के लिए पुरूषार्थ करने की अपेक्षा सत्य को समझने और सत्य को अपने अन्दर धारण करने का पुरूषार्थ करना चाहिए । मनुष्य किसी-किसी विषय में सत्य को धारण करता है परन्तु सभी विषयों में धारण नहीं कर पाता है । आत्मानुभूति के सन्दर्भ में सभी विषयों में सत्य को धारण करना पड़ता है । जिस प्रकार शरीर को जीवित रखने के लिए ऊर्जा की आवश्यकता पड़ती है, उसी प्रकार आत्मानुभूति के लिए भी सत्य की आवश्यकता पड़ती है । जिस प्रकार शरीर को ऊर्जा चाहिए यह सत्य है, उसी प्रकार आत्मानुभूति के लिए सत्य चाहिए यह भी सत्य है । परन्तु साधक शरीर वाले सत्य को स्वीकार कर पालन करता है, लेकिन आत्मानुभूति के लिए सत्य को स्वीकार करके भी पालन नहीं करता है । इसीलिए सत्य को छोड़कर मन को एकाग्र करने में लगा हुआ है, किन्तु मन एकाग्र नहीं होता पर पुरूषार्थ निरन्तर चलता रहता है । मन को एकाग्र करने वाले पुरूषार्थ को सत्य में लगा कर सत्य को अपनाए, जिससे आत्मानुभूति कर सके । साधक स्वयं के प्रति सत्याचरण करे अर्थात् स्वयं के प्रति असत्य आचरण न करे । क्या कोई स्वयं के प्रति भी असत्य आचरण करता है? हाँ करता है स्वयं में सामर्थ्य के होते हुए भी सामर्थ्य नहीं है, ऐसा मानता है, स्वयं में बल होते हुए भी नहीं है, ऐसा मानता है, योग्यता के होते हुए भी नहीं है, ऐसा स्वीकार करता है । इस प्रकार स्वयं के अनेक विषयों में इसी प्रकार मानता है । जो मनुष्य स्वयं के प्रति असत्य आचरण नहीं करेगा, इसकी आशा कैसे की जा सकती है । व्यवहार काल में प्राणी मात्र के साथ सत्याचरण किये बिना मन प्रसन्न नहीं रह सकता । असत्याचरण के कारण मन में विभिन्न प्रकार के विचारों की श्रृंखला चल पड़ती है, जिस कारण मन शान्त नहीं रह पाता । ऐसी स्थिति में साधक को आत्मानुभूति किस प्रकार हो पायेगी अर्थात् नहीं होगी । आत्मानुभूति करने वाले साधक को चाहिए कि समस्त आत्माओं को एक जैसा अनुभव करना चाहिए । कि समस्त आत्माओं को एक जैसा अनुभव करना चाहिए । अर्थात् किसी को अपना और किसी को पराया न मानते हुए सबको एक जैसा अनुभव करे जिससे छोटे-छोटे स्वार्थों से ऊपर उठकर प्राणी मात्र को एक समान अनुभव करता हुआ सब के साथ सत्याचरण करने से मन प्रसन्न रहेगा । मन के प्रसन्न रहने से मन में शान्ति होगी । मन के शान्त होने से मन में विभिन्न प्रकार के विचार उत्पन्न नहीं होंगे । जिससे मन एकाग्र हो कर आत्मानुभूति कराने में सक्षम हो पायेगा । इसलिए मन के किसी भी कोने में असत्य बसा हुआ नहीं होना चाहिए **'मनः सत्येन शुध्यति'** इस मनु महाराज के वचनानुसार मन सत्य से शुद्ध हो कर ही आत्मानुभूति कराने में समर्थ होता है ।

आत्मानुभूति करने के इच्छुक साधक को व्यवहार काल में व्यवहार करते हुए अस्तेय (चोरी का त्याग) का पालन करना पड़ता है । किसी भी व्यवहार में अन्याय न हो, चाहे किसी व्यक्ति विशेष से सम्बन्धित हो । किसी भी प्रकार से चोरी का त्याग सूक्ष्मता से करना पड़ता है। अनेक बार मनुष्य बड़े-बड़े विषयों में चोरी से बच जाता है, परन्तु छोटे-छोटे विषयों में चोरी कर बैठता है । अनेक बार अनजाने में चोरी कर लेता है और अनेक बार जानबूझ कर चोरी कर लेता है लापरवाही से चोरी का भागी बन जाता है, आलस्य के कारण चोरी कर लेता है। आलस्य, प्रमाद (लापरवाही) से जो चोरी हो रही होती है, उसे चोरी नहीं मानता, यह एक बहुत बड़ी भ्रान्ति है । जिस कारण साधक मन को एकाग्र नहीं कर पाता है । उदाहरण के लिए मनुष्य व्यवहार काल में प्रतिदिन में आने वाली वस्तुओं (आटा, चावल, चीनी आदि) का क्रय करता है, परन्तु उनका बिल नहीं लेता है । बिल न लेना भी चोरी कहलाता है, चाहे जाने-अनजाने में हो रहा हो या आलस्य, प्रमाद से हो रहा हो । चोरी तो चोरी ही कहलायेगी । बिल न ले कर दुकानदार को और अधिक गलत करने का अवसर प्रदान किया जाता है । आजकल प्रायः सभी वाहनों का प्रयोग करते हैं, परन्तु सभी लोग वाहनों में पेट्रोल, डीजल डलवा कर बिल नहीं लेते हैं यह भी चोरी को बढ़ावा देने का कार्य होने से स्वयं के लिए भी चोरी ही कहलायेगी । इसलिए साधना (ध्यान) करने वाले साधक को पूर्ण रूप से चोरी का त्याग करना पड़ता है, जिससे आत्मानुभूति करने में किसी भी प्रकार का व्यवधान उत्पन्न नहीं होना चाहिए ।

जिस प्रकार से पूर्ण रूप से अहिंसा का पालन, सत्य का पालन, अस्तेय का पालन करना है, उसी प्रकार ब्रह्मचर्य का पालन भी पूर्ण रूप से करना पड़ता है । जो व्यक्ति संयम नहीं कर सकता, वह व्यक्ति मन को एकाग्र कैसे कर सकता है? इसलिए संयम से ही मन को रोका जा सकता है और संयम भी पूर्ण रूप से होना चाहिए अन्यथा आत्मानुभूति नहीं हो पायेगी । आत्म-साक्षात्कार के लिए पूर्ण ब्रह्मचर्य का पालन होना चाहिए । ब्रह्मचर्य पालन में विकल्प नहीं है, इसलिए महर्षि पतञ्जलि ने ब्रह्मचर्य को सार्वभौम सिद्धान्त (नियम) माना है । इस सिद्धान्त का कोई विकल्प नहीं है । यहाँ पर कोई यह न समझे कि गृहस्थी व्यक्ति आत्म-साक्षात्कार नहीं कर पायेगा, ऐसा नहीं है किसी भी आश्रम में रहने वाला व्यक्ति आत्म-साक्षात्कार कर सकता है, परन्तु गृहस्थी गृहस्थ के कर्तव्यों को करते हुए आत्म-साक्षात्कार नहीं कर पायेगा । हाँ गृहस्थ के कर्तव्यों को पूरा (सन्तानोत्पत्ति) करके फिर पूर्ण ब्रह्मचर्य का पालन करते हुए आत्म-साक्षात्कार कर सकता है । सन्तानोत्पत्ति (का) उद्देश्य नहीं है फिर भी ब्रह्मचर्य का स्खलन करते जाये और आत्म-साक्षात्कार के लिए पुरूषार्थ करते जाये । ऐसी स्थिति में आत्मानुभूति नहीं कर पायेगा । इसलिए सार्वभौम सिद्धान्तों का उल्लन्घन किसी भी आश्रमवासी के लिए हानिकारक है । इस कारण सार्वभौम सिद्धान्तों का पालन करना प्रत्येक मनुष्य के लिए अत्यन्त आवश्यक है । ब्रह्मचर्य रूपी संयम से मन प्रसन्न रहेगा और प्रसन्न मन शान्त रहेगा । शान्त मन में विविध विचार उत्पन्न नहीं होते हैं । इसलिए मन आत्मा में सरलता से एकाग्र होता है और आत्मानुभूति में किसी भी प्रकार का विघ्न बाधित नहीं करता ।

जो मनुष्य आध्यात्मिक मार्ग में चलते हुए योगाभ्यास के माध्यम से आत्मानुभूति करना चाहता है, ऐसे व्यक्ति के लिए अपरिग्रह (परिग्रह न करना) का पालन करना होता है । साधनों के संग्रह को परिग्रह कहते

हैं । यद्यपि मनुष्य बिना साधनों के संग्रह के अपने लक्ष्य को पूर्ण नहीं कर सकता, परन्तु सीमित साधनों (आवश्यक साधनों) की अपेक्षा प्रत्येक व्यक्ति को रहती है । आवश्यक साधन का अभिप्राय है जिनके बिना मनुष्य जीवित न रह सके और जिनके बिना ईश्वर प्राप्ति रूप लक्ष्य पूर्ण न हो सके । इन आवश्यकताओं में भी व्यक्ति विशेष, अवस्था (आयु) विशेष, परिस्थिति विशेष, समय विशेष को ध्यान में रख कर भी देखा जाता है । मनुष्य के पास शक्ति, सामर्थ्य, ज्ञान आदि अनेक प्रकार की योग्यताएँ हैं, इसलिए उन योग्यताओं का उपयोग करते हुए अनेक साधनों का संग्रह कर लेता है । अनेक साधन (अनावश्यक साधन) एक व्यक्ति के लिए अधिक होते हैं, परन्तु उन अधिक साधनों को साधन रहित व्यक्तियों को न देकर स्वयं के पास ही रखना हानिकारक है । परन्तु साधन सम्पन्न व्यक्ति उन साधनों का प्रयोग न कर प्रायः दुरूपयोग करते है । जिससे साधन रहित व्यक्तियों का दुःख मिलता है । यदि अधिक साधन होने पर उन्हें साधन रहित व्यक्तियों को दिया जाये, तो उनका उपकार होगा और स्वयं का पुण्य कर्म बन जायेगा । यदि अन्यों को देने की इच्छा न हो, तो अधिक साधन एकत्रित करने में पुरूषार्थ न करके बचे हुए पुरूषार्थ को ईश्वर प्राप्ति के लिए लगा देना चाहिए । यदि ऐसा नहीं करते हैं तो पाप के भागी बन जाते हैं । इसलिए मनुष्य को परोपकार भी करना चाहिए । साधन सम्पन्न व्यक्ति परोपकार भी न करे और स्वयं के द्वारा उपार्जित साधनों का स्वयं भी प्रयोग न करे, तो प्रायः मनुष्य आलसी, प्रमादी बन कर पुरूषार्थ हीन हो कर स्वयं की और अन्यों की भी हानि करता है । यदि साधनों की भी अति हो जाये, तो मनुष्य ईश्वर प्राप्ति से बहुत दूर हो जाता है । अधिक साधनों के लिए मनुष्य हिंसा, झूठ, चोरी, असंयम का सहारा लेकर अन्याय, अधर्म पूर्वक साधनों को एकत्रित करने की चेष्टा करता है और सफल भी होता है । साधन सम्पन्नता से भौतिक सुख को प्राप्त तो करता है, परन्तु विभिन्न प्रकार के दुःखों, कष्टों, समस्याओं से घिरा रहता है । आवश्यकता से अधिक साधनों का एकत्रित करने में बहुत अधिक दुःख होता है, किसी कवि ने कहा भी है कि

अर्थानामर्जने दुःखमर्जितानां च रक्षणे ।
आये दुःखं व्यये दुःखं धिगर्थान् कष्टसंश्रयान् ।।

अर्थात् आवश्यक साधनों से अधिक साधन एकत्रित करने में दुःख होता है । यदि अधिक साधन हो भी जायें तो उनकी रक्षा करने में विभिन्न प्रकार के दुःख आते हैं । अधिक साधनों को और अधिक बनाने में भी दुःख होता है । इसलिए इतने अधिक दुःख देने वाले ये अधिक साधन हमें नहीं चाहिए । इन साधनों को धिक्कार है इसलिए योगाभ्यासी परिग्रह न करता हुआ पूर्ण अपरिग्रह का पालन करता है जिससे मन में विभिन्न विचारों को स्थान न दे कर मन को शान्त रखता हुआ प्रसन्न रहता है । इस कारण प्रसन्न मन एकाग्र हो कर आत्मानुभूति करने में समर्थ हो जाता है ।

मन को एकाग्र किये बिना आत्मानुभूति होती नहीं है और एकाग्रता मन को शुद्ध (शौच) किये बिना नहीं आती है । मन शुद्ध होता है सत्य को स्वीकार करने से । मनुष्य काम, क्रोध, लोभ, मोह, ईर्ष्या, अहंकार से संलिप्त रहता ही है, इस कारण इन काम, क्रोध आदि शत्रुओं के रहते हुए मनुष्य असत्य को त्याग नहीं कर पाता है और असत्य के कारण भी काम, क्रोध आदि शत्रु उत्पन्न होते हैं । इन सभी दोषों (मलों) को दूर करना पड़ता है, जिससे मनुष्य सत्य को धारण करने में समर्थ हो जाता है । ये दोष मन को एकाग्र होने नहीं देते हैं, इन दोषों के कारण एक प्रकार से मन मलिन हो जाता है । वह मल मन को विचलित करता रहता है, मन को विक्षिप्त, मूढ़ व क्षिप्त करता रहता है । इसलिए जब तक मन में मल रहेगा तब तक मन एकाग्र नहीं हो पायेगा । प्रायः मनुष्य अशुद्धि (मल) को दूर नहीं करता है, यदि दूर भी करता है तो मन के मल को दूर न कर शरीर व वाणी के मल को ही दूर करने में लगा रहता है । यद्यपि शरीर व वाणी के मल को दूर करना चाहिए, परन्तु जितनी आवश्यकता मन के मल को दूर करने में है, उतनी आवश्यकता शरीर, वाणी के मल को दूर करने में नहीं है । अवस्था (आयु) परिस्थिति, काल आदि को ध्यान में रख कर किसी कारण से शरीर, वाणी की शुद्धि न भी हुई हो तो भी चल सकता है अर्थात् प्रयोजन की सिद्धि हो सकती है, परन्तु मन की शुद्धि के बिना प्रयोजन की सिद्धि कभी भी नहीं हो सकती है । इसलिए बाहर (शरीर, वाणी) की शुद्धि में उतना ध्यान न देकर अन्दर (मन) की शुद्धि में विशेष ध्यान देना चाहिए । यहाँ पर कोई यह न समझे कि बाहर की शुद्धि नहीं करनी चाहिए, बल्कि यह समझा जावे कि मुख्यता अन्दर की शुद्धि में है । यदि बाहर और अन्दर दोनों की शुद्धि में एक की ही शुद्धि करने का अवसर मिले, तो बाहर की न कर अन्दर की ही करना चाहिए । इस रूप में ही अभिप्राय लेना चाहिए । अनेक बार मनुष्य मुख्यता को छोड़ कर गौण को अपनाने लगता है । प्रायः मनुष्य कम पुरूषार्थ की ओर बढ़ता है अर्थात् अधिक पुरूषार्थ से बचना चाहता है । जो साधक योगाभ्यास के माध्यम से आत्मानुभूति करना चाहता है, तो उसे अधिक पुरूषार्थ वाले मन की शुद्धि की ओर आगे बढ़ना चाहिए । जिससे साधक शीघ्रता से मन को एकाग्र कर सके और विभिन्न विचारों को रोक कर शान्त हो सके । शान्त मन से प्रसन्न हो कर मन को आत्मा में एकाग्र करके आत्मानुभूति कर सके । इसलिए योग साधक को पूर्ण रूप से शौच को अपनाना चाहिए जिससे मन बिना किसी बाधा के आत्मा को आत्मानुभूति करा सके ।

कोई भी मनुष्य बिना कर्म किये नहीं रह सकता है । जितना भी कर्म करता है, उस कर्म का परिणाम (फल) उसे अवश्य मिलता है । यह अलग बात है कि वह फल कब मिलेगा । यदि वर्तमान में जिस किसी भी कर्म का फल मनुष्य को मिलता है, उस फल से प्रायः मनुष्य सन्तुष्ट नहीं हो पाता है । हताश-निराश होता है, खिन्न रहता है, असन्तोष चेहरे में स्पष्ट दिखाई देता है । मनुष्य अपने कर्मों के फलों से कभी प्रसन्न नहीं हो पाता है । ऐसा इसलिए होता है कि वह व्यक्ति अपनी इच्छा, ज्ञान, बल आदि योग्यताओं के आधार पर ही कर्म करता है अर्थात् जितनी इच्छा से, जिस प्रकार के ज्ञान से, जितनी शक्ति आदि से पुरूषार्थ करता है । उसका फल भी उसी के अनुरूप दिया जाता है । फिर

भव्यतम मकान उस पर टायर की शान!

अशोक आर्य

आप जरा किसी नवनिर्मित कॉलोनी में एक चक्कर लगावें । एक से एक शानदार मकान आपको दिखेंगे । वस्तुतः उपलब्ध संसाधनों के आधार पर प्रत्येक मनुष्य सब में अलग दिखे ऐसा मकान बनाना चाहता है, जिसे देख बार-बार 'वाह' निकल पड़े । परन्तु एक और सामान्य चीज आपको दिखेगी वह यह कि प्रायः प्रत्येक भवन के ऊपर एक काला टायर लटका नजर आयेगा । जैसे मखमल में टाट का पैबन्द हो । विचारणीय है कि इस कुदृश्य को क्यों लगाया जाता है? उत्तर यह मिलता है कि 'नजर न लग जावे'- इसलिए । लीजिए साहब! मकानों को भी नजर लगने लगी । यह कुछ ऐसा ही जैसे आज से ५०-६० वर्ष पूर्व तक बच्चों के नाम कालिया, घसीटा इत्यादि इस कारण रखे जाते थे कि उनको नजर न लगे । महर्षि दयानन्द द्वारा प्रवर्तित सुन्दर-सारगर्भित-नामकरण-क्रान्ति' पश्चात् आज एक से एक सुन्दर नाम रखे जाते हैं । परन्तु आज बालकों की औसत आयु बढ़ी ही है । अतः नजर का लगना, व्यर्थ का भय है । वस्तुतः बचपन से ही हमारे भीतर ऐसे संस्कार प्रविष्ट हो जाते हैं कि अनिष्ट की आशंका से सदैव भयभीत हम, हर उस बात को अपनाने के लिए उद्यत हो जाते हैं जो त्राण देने वाली बतायी जाती है, चाहे वह कितनी भी हास्यास्पद अथवा मूर्खतापूर्ण क्यों न हो । हम पढ़ लिख कितना भी गए हों पर स्थिति यह है कि जीवन का हर क्षण अन्धविश्वासों के शिकंजे में है । वास्तुशास्त्र के नाम पर

शेष भाग अगले पृष्ठ पर .....

भी मनुष्य असन्तुष्ट रहता है, तो उस मनुष्य की अज्ञानता ही कहलायेगी । मनुष्य को जितना फल प्राप्त होता है, उसी में सन्तुष्ट हो कर और अधिक फल पाने के लिए और अधिक इच्छा, ज्ञान, बल आदि को उत्पन्न करे, जिससे अधिक फल पा सके । मनुष्य यह जान नहीं पा रहा है कि सन्तोष करने से जितना सुख मिलता है उतना सुख संसार के किसी भी वस्तु से नहीं मिल सकता । इसलिए महर्षि पतञ्जलि ने कहा है कि **'सन्तोषादनुत्तमसुखलाभः'** अर्थात् संसार में सांसारिक पदार्थों से अधिक सुख सन्तोष से मिलता है । इस कारण योग साधक पूर्ण सन्तोष का पालन करता है, तो उसका मन विचलित नहीं होता है और मन में व्यर्थ विचार उत्पन्न नहीं होते हैं जिससे मन सरलता से एकाग्र हो जाता है और एकाग्र मन आत्मानुभूति कराने में समर्थ हो जाता है ।

संसार में प्रत्येक मनुष्य तप करता है, परन्तु आत्मानुभूति के लिए जितना तप करना चाहिए उतना तप न करने के कारण योग साधक आत्मानुभूति नहीं कर पा रहा है । महर्षि वेद व्यास के अनुसार बिना विशेष तप के कोई भी साधक आत्मानुभूति नहीं कर सकता । शारीरिक व वाचनिक तप तो बहुत सारे लोग करते हैं, परन्तु मानसिक तप कोई-कोई कर पाता है । मानसिक आवेगों को रोके रखना प्रत्येक व्यक्ति के बस की बात नहीं है, क्योंकि शारीरिक व वाचनिक तप अन्यों को दिखाई देता है । इसलिए व्यक्ति दिखावे के लिए बहुत कुछ तप करता है, परन्तु मानसिक तप स्वयं व परमेश्वर के अतिरिक्त किसी को दिखाई नहीं देता है इसीलिए व्यक्ति मानसिक तप नहीं कर पाता है । शारीरिक और वाचनिक तप करके व्यक्ति उत्कृष्ट तपस्वी, तो बन जाता है पर मानसिक रूप से उत्कृष्ट भोगी बना रहता है । जब तक मानसिक भोग को दूर नहीं किया जाता तब तक मन को एकाग्र नहीं किया जा सकता । इसलिए साधक को विशेष रूप से मानसिक तप को अत्यधिक करके मन को शान्त करना चाहिए जिससे मन एकाग्र हो कर आत्मानुभूति करा सके । क्योंकि तप से ही योग की सिद्धि होती है भोग से कदापि नहीं ।

मनुष्य प्रायः स्वाध्याय से बचता है । विशेष कर आत्मा, परमात्मा से सम्बन्धित पुस्तकों से बहुत दूर रहता है । कुछ लोग आत्मानुभूति तो करना चाहते हैं, परन्तु आत्मा, परमात्मा से सम्बन्धित शास्त्रों को पढ़ना नहीं चाहते हैं । महर्षि वेदव्यास ने स्पष्ट कहा है कि मोक्ष को दिलाने वाले शास्त्रों का अध्ययन अवश्य करना चाहिए । बिना शास्त्र अध्ययन के मनुष्य को ज्ञान नहीं होता है और बिना ज्ञान के विवेक, अभ्यास, वैराग्य के लिए मनुष्य पुरुषार्थ नहीं करता है । इसलिए शास्त्रों का अध्ययन अवश्य करते रहना चाहिए, क्योंकि निरन्तर स्वाध्याय करते रहने से मनुष्य का मन विचलित नहीं होता है । स्वाध्याय मनुष्य को निरन्तर उचित-अनुचित, न्याय-अन्याय, धर्म-अधर्म, पाप-पुण्य आदि का निरन्तर बोध कराता रहता है । शास्त्रों के स्वाध्याय से साधक अपने मन को सरलता से एकाग्र करने में समर्थ होता है । जिससे मन आत्मा में एकाग्र हो कर आत्मानुभूति करा देता है ।

स्वाध्याय निरन्तर करने वाले साधक के समक्ष परमेश्वर के उपकारों का सतत् बोध होता है । जिससे साधक स्वयं को ईश्वर के प्रति समर्पित कर देता है । जिस साधक ने समर्पण किया हो, वह कोई भी कार्य करे, वह कार्य ईश्वर की आज्ञा के अनुरूप ही करता है । ईश्वर की आज्ञा के अनुरूप कर्मों को करने वाला साधक कभी अनुचित कर्म नहीं करेगा । जिससे साधक का मन विचलित नहीं होता । साधक प्रसन्नता से रहता है, इस कारण साधक का मन शान्त रहता है । शान्त मन से मन को आत्मा में एकाग्र करता है और आत्मानुभूति कर लेता है । इस प्रकार आत्मानुभूति करने के लिए यम और नियम अत्यन्त आवश्यक हैं । जिनके प्रति साधक ध्यान न देकर योग के अन्य अंगों में अधिक ध्यान देकर आत्मानुभूति से वंचित रहता है ।

ऋषि उद्यान, पुष्कर मार्ग, अजमेर
'परोपकारी से साभार'

.....***.....

हम ऐसी ही अनेक मान्यताओं के जाल में जकड़े हैं । हमारे एक प्रोफेसर मित्र हैं । वे वास्तुशास्त्र के आधार पर सम्पूर्ण दोष निवारण के चक्कर में एक वर्ष तक तो भवन का नक्शा ही तैयार नहीं कर पाये । बनने के बाद भी बदलाव किए । विशेष कोण में 'स्टडी रूम' बनवाने पर भी बेटा आई.आई.टी. में प्रवेश नहीं ले सका । वस्तुतः वास्तुशास्त्र का जितना पक्ष भवन निर्माण में वातानुकूलन, वायु प्रवेश, सम्पूर्ण शाला में यथेष्ठ प्रकाश हेतु दिशाओं का चयन कर द्वार, खिड़कियों का निर्माण, सुगन्ध, सुन्दरता, नयनाभिरामता (समचौरसता आदि), यथायोग्य परिणामयुक्तता आदि से संबंधित है वही वस्तुतः वास्तुशास्त्र है, वह अत्यावश्यक है । परन्तु ऐसे निर्देश का पढ़ने का कमरा विशेष दिशा में रखने से बच्चे परीक्षा में अच्छे परिणाम लायेंगे अथवा विशेष कोने में सोने से जिनका विवाह नहीं हो पा रहा हो उनका विवाह हो जावेगा, मूर्खतापूर्ण ही नहीं संपूर्ण बौद्धिक विनाश के जनक तथा पुरूषार्थ की हत्या करने की प्रेरणा देने वाले हैं । ऐसे काम हमारे विचार में सामाजिक अपराध की कोटि में आते हैं । ऐसे बौद्धिक विनाशकर्ता को निश्चित सजा मिलनी चाहिए ।

देखिए ऐसे दो दावे ऐसे ही वास्तुशास्त्रों में दृष्टव्य हैं-

१. एक सज्जन के यहाँ लाख प्रयत्न करने के बाद भी उसके बच्चे के नम्बर ६० प्रतिशत से ज्यादा नहीं आ रहे थे । सिर्फ बच्चे के पढ़ने के स्थान को बदलने मात्र से अब ८० प्रतिशत से ज्यादा नम्बर आ रहे हैं । ईशान दिशा सही होना बच्चों के पूर्ण विकास के लिये अत्यन्त आवश्यक है । कमजोर बच्चों को विशेषकार ईशान दिशा वाले कक्ष में पढ़ाई की व्यवस्था करायें तो आप खुद आश्चर्यजनक परिणाम देखेंगे ऐसा संभव ना हो तो घर के पश्चिम दिशा वाले कमरे में उन्हें पूर्वमुखी होकर पढ़ायें, वांछित परिणाम निकलने लगेंगे ।

२. अविवाहित युवक हो या युवती जिसका विवाह नहीं हो रहा है और अनेक बाधाएँ आ रही हैं, उन्हें घर के नैऋत्य कोण अर्थात् दक्षिण-पश्चिम दिशा वाले कोण में सोना चाहिए, इससे शीघ्र विवाह योग बनेंगे । यदि किसी परिवार में अलग से कमरा न हो तो वह नैऋत्य कोण वाली जगह में सोएँ और लाभ पाएँ । अपने को authentic बताने के लिए वास्तुशास्त्र की साइट्स पर वेदादिशास्त्रों के समर्थन की बात कही जाती है ।

हम प्राचीन शास्त्रों के नाम पर मनगढ़न्त बातें बना स्वार्थ सिद्धि में लगे हुए हैं । जैसे दावे ये तथाकथित वास्तुशास्त्री करते हैं वेदादि शास्त्रों में वैसा कुछ नहीं है । वस्तुतः ऐसी परिपाटी बन गयी है कि संस्कृत में जो कुछ वह दिया जाता है उसे वेदवाक्य समझ लिया जाता है ।

सुप्रसिद्ध वैदिक विद्वान् डॉ. सम्पूर्णानन्द जी ने अपने ग्रन्थ 'ब्राह्मण सावधान' में एक वास्तविक घटना लिखी है ।

एक सायं काशी के कोई महामहोपाध्याय पदवी वाले पण्डे जी उनसे भेंट करने आये । पर्याप्त समय तक वार्ता चली अन्ततः पण्डे जी ने विदा चाही । जाते-जाते लघुशंका की इच्छा भी जाहिर की । गृहपति के द्वारा बताये स्थान की ओर जाने लगे, पता नहीं उस समय सम्पूर्णानन्द जी को क्या सूझा, यकायक यह श्लोक उच्च स्वर में निकल गया 'लघुशंका न कर्तव्या सायं प्रातर्जनाधिप' (सायं तथा प्रातः लघुशंका नहीं करनी चाहिए) इस श्लोकांश को सुनते ही पण्डे जी के मानो पाँव तले धरती चिपक गयी । कान पर चढ़ाया जनेऊ उतार कर घर जाने को उद्यत हुये । इस पर मंद-मंद मुस्कारते हुये सम्पूर्णानन्द जी ने श्लोक का उत्तरार्द्ध भी सुना दिया 'अवश्यमेव नरके वासो भवति इति शुश्रुम' (सायं प्रातः लघुशंका करने वाले को अवश्य ही नरकवास मिलता है, ऐसा हमने सुना है) यह सुनकर तो धर्मभीरू पण्डे के पाँवो तले जमीन ही खिसक गयी । वे जब जाने लगे तो सम्पूर्णानन्द ने उन्हें आश्वस्त किया कि ये श्लोक स्वनिर्मित था । उन्होंने इसलिए उच्चारित किया ताकि वे जान सकें कि महामहोपाध्याय उपाधिधारी पंडित भी मात्र 'बाबावाक्यं प्रमाणम्' को मानने वाले हैं ।

महर्षि दयानन्द जी महाराज ने संस्कार विधि में 'शाला निर्माण' के संदर्भ में जिन वेद मंत्रों को उद्धृत किया है उनके भाष्य में वास्तुशास्त्र के सही स्वरूप का दिग्दर्शन होता है । कुछ बिन्दु पाठकों के चिन्तन हेतु ऋषि-भाष्य में से प्रस्तुत हैं ।

१. (घर) सब प्रकार की उत्तम उपमायुक्त कि जिसको देख के विद्वान् लोग सराहना करें ।

२. वह शाला चारों ओर के परिमाण से समचौरस हो ।

३. उसके (शाला के) बन्धन और चिनाई दृढ़ हो ।

४. शाला के चारों ओर स्थान शुद्ध हो ।

५. शाला में सूर्य का प्रतिभास आवे ।

६. उस घर का विशेषमान परिमाणयुक्त लम्बी, ऊँची छत और भीतर का प्रसार विस्तारयुक्त होवे ।

७. सब ऋतुओं में सुख देने वाली हो (यह बिन्दु शिल्पी के अनुभव व योग्यता को इंगित करता है ।)

८. चारों ओर का शुद्ध वायु आवे, अशुद्ध वायु निकलता रहे ।

यह है विशुद्ध वास्तुशास्त्र का संकेतात्मक स्वरूप जो वेदादि शास्त्रों में मिलता है । वहाँ अविश्वसनीय दावों का कोई स्थान नहीं है । वस्तुतः शिल्पी के समक्ष यही चुनौती होनी चाहिए कि उसकी ड्राइंग में द्वारादि की दिशा तदनुरूप हो ताकि उक्त अभीष्ट की प्राप्ति हो सके ।

वेद में 'वास्तोष्पते' (ऋ.सं.७ सूक्त ५४) में तथाकथित वास्तुशास्त्र के खोजने वाले जान लें कि वहाँ 'वास्तोष्पते' से गृह के रक्षकरूप में परमपिता परमात्मा ही अभिप्रेत है । निठल्लों को धन प्राप्त कराने हेतु कोण निर्धारण का विवरण नहीं है । **ईकोफेन्डली भवन बनाना ही सच्ची वास्तु कला है ।** अस्तु ।

०९००१३३१८३६, ०९३१४२३५१०१

'सत्यार्थ सौरभ' से साभार

राष्ट्र-वन्दना

देव नारायण भारद्वाज

हे मातृ भूमि । हे पितृ धाम, प्यारे स्वराष्ट्र तुमको प्रणाम ।।
विद्वान् जगें, शासक जागें, जो ब्रह्मतेज का प्रण जागें ।
जिनके बल, आयुध के द्वारा, अरि-प्रतिगामी डर कर भागें ।
अनुपम स्वदेश हो ख्यात नाम । प्यारे स्वराष्ट्र तुमको प्रणाम ।।
अन्नपूर्णा सुभग नारियाँ, सदा सुनायें प्रखर लोरियाँ ।
शिशु सभ्य युवा यजमान बनें, रोज ओज की पकड़ डोरियाँ ।
जो बढ़े विजय की ध्वजा थाम । प्यारे स्वराष्ट्र तुमको प्रणाम ।।
कामधेनु हों कल्पवृक्ष हों, सैनिकगण के सुदृढ़ वक्ष हों ।
शिल्पकार, गुरू श्रमिक-श्रेष्ठी, धर्मनिष्ठ कल्याण दक्ष हों ।
हो पवन प्रभा सुरभित ललाम । प्यारे स्वराष्ट्र तुमको प्रणाम ।।
मृदु मेघ गगन में गहरायें, जो इच्छित जल को बरसायें ।
खेत भरें उद्यान हरे हों, शस्य श्यामला भूमि बनायें ।
फलफूल अन्न औषधि उपजें, प्रासाद-कुटी सुखराज सजें ।
हो ललित कला विज्ञान भला, उत्तम चरित्र के राग बजें ।
सब पायें नर विश्राम-काम । प्यारे स्वराष्ट्र तुमको प्रणाम ।।
प्रभु योग क्षेम का वर्तन हों, सर्वत्र हर्ष-आकर्षण हो ।
निष्पक्ष एकता समता का, संगठन प्रेम सम्बर्द्धन हो ।
हे राष्ट्र रहो अभिराम-साम । प्यारे स्वराष्ट्र तुमको प्रणाम ।।

अलीगढ़

.....***.....

अभाव सहिष्णुता का

ओमप्रकाश बजाज

होता जा रहा है हमारे जीवन में तीव्रता से
धैर्य का सहिष्णुता का अभाव
संभवतः इसके भी मूल में है
बदलते सामाजिक मूल्यों का कु-प्रभाव,
धैर्य को माना जाने लगा है कमज़ोरी
सहनशीलता बन गई है दब्बूपन की निशानी,
चलने लगी है उसी की
जो करता फिरे हर जगह मनमानी,
जरा जरा सी बात पर सड़कों पर
नित्यप्रति देखने को मिलता है क्रोधोन्माद.
चाकू और पिस्तौल से निबटाए जाते हैं
अब मामूली से मामूली वाद-विवाद.
कच्ची उम्र के बालक बालिकाएं
गले में फंदा डाल लटक जाते हैं.
न जाने किस आकस्मिक उद्वेग में
वे यह दारूण कदम उठाते हैं.
हमारी यह धैर्यहीन मनःस्थिति
हमें कहां ले कर जाएगी
हमारे व्यक्तिगत, पारिवारिक, सामाजिक
जीवन को कितनी क्षति पहुंचाएगी?

बी-2, गगन विहार, गुप्तेश्वर, जबलपुर-482001 म.प्र.
फोन : 0761-2426820 मो.: 9826496975

.....***.....

प्रो. वेद कुमारी घई को राष्ट्रपति द्वारा ''पद्मश्री'' सम्मान

आर्य प्रतिनिधि सभा जम्मू कश्मीर की सदस्या, जम्मू विश्वविद्यालय के संस्कृत विभाग की पूर्वाध्यक्ष और इस समय गांधी सेवा सदन जम्मू की अध्यक्ष प्रो. वेद कुमारी घई जी को इस वर्ष का पद्मश्री सम्मान महामहिम राष्ट्रपति डॉ. प्रणव मुखर्जी द्वारा प्रदान किया गया । प्रो. घई विशिष्ट विदुषी तथा संस्कृत, हिन्दी डोगरी, अंग्रेजी की सृजनशील लेखिका हैं । उनकी बीस कृतियों में कश्मीर के नीलमत पुराण का अध्ययन तथा डोगरी के ध्वनि विज्ञान पर लिखा ग्रन्थ विदेशों में भी ख्याति पा चुके है । 14 दिसम्बर 1931 को जम्मू में जन्मी वेदकुमारी घई ने बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय से 1960 में पी.एच.डी. की डिग्री प्राप्त की । डेनमार्क की सरकार से शोधवृति पाकर कोपेन हेगल विश्वविद्यालय में डोगरी ध्वनियों पर शोध कार्य किया और वहां के भारती संस्थान में संस्कृत का अध्यापन भी किया । उनके निर्देशन में बीस एम.फिल.तथा अठारह पी.एच.डी. उपाधिप्राप्त शोध प्रबन्ध लिखे गए तथा सत्तर से अधिक शोधपत्र प्रकाशित हुए हैं । प्रो. घई डोगरी रिसर्च इन्स्टीट्यूट, भारतीय विद्या भवन, संस्कृत विश्व परिषद्, साहित्य अकादमी दिल्ली जम्मू कश्मीर कला संस्कृति तथा भाषा अकादमी, कस्तूरबा गांधी ट्रस्ट, सामाजिक स्वास्थ्य संस्थान जैसी कई संस्थाओं से जुड़ी रही हैं । प्रो. वेदकुमारी घई को कई पुरस्कार/सम्मान प्राप्त हो चुके हैं जिन में से कुछ एक हैं- संस्कृत वैदुष्य के लिए राष्ट्रपति सम्मान (१९९७),शारदा सम्मान (१९९३),लल्लेश्वरी सम्मान (२००७), स्त्री शक्ति पुरस्कार (२००९), समाज सेवा के लिए स्वर्णपदक (१९९५), डोगरारत्न सम्मान (२००५), एवं महारजा गुलाब सिंह पुरस्कार (२०१२)। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसन्देश परिवार की ओर से प्रो. वेद कुमारी जी एवं आर्य प्रतिनिधि सभा जम्मू-कश्मीर के समस्त पदाधिकारियों को हार्दिक बधाई ।

आर्य पर्वों की सूची : विक्रमी सम्वत् २०७०-७१ तद्नुसार सन् २०१४

क्र.सं.	पर्व का नाम		चन्द्र तिथि	अंग्रेजी दिनांक	दिन
१.	लोहड़ी		पौष शुक्ल, १३ वि.२०७०	१३/०१/२०१४	सोमवार
२.	मकर-संक्रान्ति		पौष शुक्ल, १४ वि.२०७०	१४/०१/२०१४	मंगलवार
३.	गणतन्त्र दिवस		माघ शुक्ल, १० वि.२०७०	२६/०१/२०१४	रविवार
४.	वसन्त-पंचमी		माघ शुक्ल, ५ वि.२०७०	०४/०२/२०१४	मंगलवार
५.	सीताष्टमी		फाल्गुन कृष्ण, ८ वि.२०७०	२३/०२/२०१४	रविवार
६.	महर्षि दयानन्द जन्मोत्सव	(ऋषि-पर्व)	फाल्गुन कृष्ण, १० वि.२०७०	२४/०२/२०१४	सोमवार
७.	शिवरात्रि (ऋषि बोधोत्सव)	(ज्योति-पर्व)	फाल्गुन कृष्ण, १३ वि.२०७०	२७/०२/२०१४	गुरूवार
८.	पं. लेखराम बलिदान दिवस	(वीर-पर्व)	फाल्गुन शुक्ल, ३ वि.२०७०	१४/०३/२०१४	सोमवार
९.	नवसंस्येष्टि (होली)	(मिलन-पर्व)	फाल्गुन पूर्णिमा, वि.२०७०	१६/०३/२०१४	रविवार
१०.	आर्य समाज स्थापना दिवस/चैत्र शुक्ल प्रतिपदा/ नवसम्वत्सर/उगाड़ी/गुड़ी पाड़वा/चैती चांद		चैत्र शुल्क, १ वि.२०७१	३१/०३/२०१४	सोमवार
११.	रामनवमी		चैत्र शुक्ल, ९ वि.२०७१	०८/०४/२०१४	मंगलवार
१२.	वैशाखी		चैत्र शुक्ल, १३ वि.२०७१	१३/०४/२०१४	रविवार
१३.	पं. गुरूदत्त विद्यार्थी जन्मदिवस		बैशाख शुक्ल १३ वि.२०७१	१२/०५/२०१४	सोमवार
१४.	हरितृतीया (हरियाली तीज)		श्रावण शुक्ल, ३ वि.२०७१	३०/०७/२०१४	बुधवार
१५.	श्रावणी उपाकर्म-रक्षा बन्धन	वेद-प्रचार समारोह	श्रावण पूर्णिमा, वि.२०७१	१०/०८/२०१४	रविवार
१६.	हैदराबाद सत्याग्रह दिवस		भाद्रपद कृष्ण, ४ वि.२०७१	१४/०८/२०१४	गुरूवार
१७.	श्री कृष्णजन्माष्टमी		भाद्रपद कृष्ण, ८ वि.२०७१	१८/०८/२०१४	सोमवार
१८.	विजय दशमी/दशहरा		आश्विन शुक्ल, १० वि.२०७१	०३/१०/२०१४	शुक्रवार
१९.	स्वामी विरजानन्द दण्डी जन्म दिवस		आश्विन शुक्ल, १२, वि.२०७१	०५/१०/२०१४	रविवार
२०.	दीपावली (ऋषि निर्वाणोत्सव)	(क्षमा-पर्व)	कार्तिक अमावस्या, वि.२०७१	२३/१०/२०१४	गुरूवार
२१.	स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस	(बलिदान-पर्व)	पौष शुक्ल २, वि. २०७१	२३/१२/२०१४	मंगलवार

नोट : देशी तिथियों में घट-बढ़ होने से पर्व तिथि में परिवर्तन हो सकता है।

आर्य समाजों तथा आर्य शिक्षण संस्थाओं आदि से निवेदन है कि पर्वों के आयोजन के लिए योजना बद्ध रूप से कार्य करें एवं उत्साह पूर्वक मनाएं। तदुपरान्त समाचार भिजवाएं जिससे उन्हें प्रकाशित किया जा सके

सत्यवीर शास्त्री
प्रधान

अनिल शर्मा
मंत्री

आर्य प्रतिनिधि सभा म.प्र. व विदर्भ

आर्य जगत के समाचार

श्रद्धानन्द गुरुकुल परली (महाराष्ट्र)में यज्ञशाला एवं अन्य कार्यक्रम सोत्साह संपन्न

परली-वैजनाथ -

उदारमना दानदाताओं द्वारा प्राप्त लगभग १० लाख रूपयों की लागत से परली-वैजनाथ (महाराष्ट्र) के श्रद्धानन्द गुरूकुल आश्रम में नवनिर्मित '**महर्षि याज्ञवल्क्य यज्ञशाला**' का उद्घाटन रविवार दि. ९ मार्च को विभिन्न वैदिक विद्वानों, तपस्वी मुनियों व आर्यजनों की उपस्थिति में संपन्न हुआ । सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के मंत्री एड.प्रकाश जी आर्य के शुभ करकमलों से तथा दिल्ली संस्कृत अकादमी के सचिव डॉ. धर्मेन्द्रकुमारजी शास्त्री, प्रसिद्ध आर्य भजनोपदेशक पं. सुरेंद्रपालजी आर्य, प्रसिद्ध आर्य उद्योजक एवं कर्मठ आर्य कार्यकर्ता श्री लखमसीभाई वेलानी (पुणे), प्रो. ओमप्रकाशजी होलीकर आदियों के प्रमुख आतिथ्य में इस समारोह का आयोजन किया गया । इस ऐतिहासिक कार्यक्रम की अध्यक्षता जानेमाने दानवीर आर्य कार्यकर्ता व हैद्राबाद स्वतंत्रता संग्राम के सेनानी श्री कपिलमुनिजी (तुकारामजी गंजेवार-धर्माबाद) ने की ।

प्रातः वैदिक विद्वान डा. धर्मेन्द्र कुमार जी शास्त्री के ब्रह्मत्व में यज्ञ शाला प्रवेश विधि सम्पन्न हुई । विशेष यज्ञ में आर्य दम्पत्ति सौ.व श्री लखमसी भाई बेलानी सौ.व श्री उग्रसेन राठौर, सौ. व श्री जुगल किशोर लोहिया तथा सौ. व मधुसुदन काले यजमान के रूप में सम्मिलित ब्रह्मा श्री शास्त्री जी ने कहा ''यज्ञ हमारी संस्कृति की आत्मा है, श्रद्धा व निष्ठा के साथ किए जाने वाले यज्ञों के अनुष्ठानों के लिए यज्ञशाला एक तरह से आधार रूप मानी जाती है । इस दृष्टि से गुरूकुल परली में बनी याज्ञवल्क्य यज्ञ शाला हम सबके लिए प्रेरणा स्थान बनेगी ।

इस यज्ञशाला में ब्रह्मचारियों व मुनिजनों द्वारा किए जानेवाले विभिन्न यज्ञों से निकली सुगंधी इस परिसर का वातावरण सुरभित होता रहेगा । पं. सुरेन्द्रपालजी आर्य ने कहा, ''प्रत्येक मनुष्य को अपने जीवन में यज्ञीय विचारों व भावनाओं को बढ़ाना चाहिए । परली की यह यज्ञशाला युगों-युगों तक हम सबको यज्ञमय जीवन जीने हेतु दिव्य सुगंधी के साथ ही विचार भी प्रदान करते रहेगी । आयोजकों की दूरदृष्टि व कार्यकर्ताओं का परिश्रम बहुतही सराहनीय है ।''

अपने उद्घाटन भाषण में श्री प्रकाश आर्य ने कहा कि आज समस्त विश्व में अनेकों समस्याएं फैली हैं । अनैतिक विचारों का संकट सर्वत्र मण्डरा रहा है । दूषित वायु ध्वनि एवं जल व आहार के प्रदूषण से प्राणी मात्र का जीना बहुत ही दुष्कर हो चुका है । ऐसी अवस्था में आर्य संस्थाओं में यज्ञ शालाओं का निर्माण होकर सर्व प्रकार के प्रदूषणों से समाज व विश्व का बचाया जा सकता है इस दृष्टि से परली के श्रद्धानन्द गुरूकुल में नवनिर्मित विशाल याज्ञवल्क्य यज्ञ शाला मुकुट मणी के रूप में महाराष्ट्र सहित दक्षिण भारत के सभी राज्यों के सर्वसाधरण जनों को प्रदूषण से बचाकर यज्ञमय जीवन जीने हेतु प्रेरणा देती रहेगी ।

तत्पश्चात् सार्वदेशिक के महामंत्री श्री प्रकाशजी आर्य के करकमलों से ओम ध्वजा फहराई गयी । मुख्य समारोह में सर्वप्रथम गुरूकुल के ब्रह्मचारियों ने वैदिक मंगलाचरण किया । महाराष्ट्र सभा व गुरूकुल के मार्गदर्शक डॉ. ब्रह्ममुनिजी ने अपने प्रास्ताविक भाषण में यज्ञशाला व अन्य उपक्रमों के नवनिर्माण के संदर्भ में विस्तार से जानकारी दी । तत्पश्चात् यज्ञशाला के निर्माण हेतु सर्वाधिक दान व सहयोग देनेवाले श्री लखमसीभाई वेलानी, डॉ. देविदासरावजी नवलकेले, जुगलकिशोर दायमा, दयाराम बस्सैये तथा अन्य सहयोगी महानुभावों का सम्मान किया गया । साथ ही गुरूकुल के छात्रों को भी सम्मानित किया गया ।

समारोह में विद्वानों ने अपने ओजस्वी विचारों से प्रेरित किया । इस कार्यक्रम का संयोजन पं. तानाजी शास्त्री एवं प्रा. अरूण चव्हाण ने किया तथा धन्यवाद प्रस्ताव डॉ. नयनकुमार आचार्य ने रखा । कार्यक्रम के लिए दूर-दूर से आर्यजन भारी संख्या में पधारे थे ।

(यज्ञशाला का चित्र हम पृष्ट २४ पर दे रहे हैं)

.....***.....

महाराष्ट्र के छः समर्पित पुरोहितों का सम्मान

वैदिक विचारों, सोलह संस्कारों एवं आर्य समाज के तत्वों को सामान्य लोगों तक पहुंचाने में बहुत ही सक्रिय भूमिका निभानेवाले महाराष्ट्र के छः आगे लिखे समर्पित पुरोहित-पंडितों का सम्मान दि.

सभाक्षेत्र के समाचार व सूचनाएं

आर्य प्रतिनिधि सभा म.प्र. विदर्भ का वार्षिक अधिवेशन नागपुर में सम्पन्न

पूर्व सूचनानुसार आर्य प्रतिनिधि सभा म.प्र.व विदर्भ की साधारण सभा की बैठक दि.११.५.१४ को आर्य समाज हंसापुरी में सम्पन्न हुई । इस अधिवेशन में सभा क्षेत्र के कोने-कोने से ४५ आर्य समाजों के प्रतिनिधियों ने भाग लिया । सभा की अध्यक्षता सभा प्रधान श्री सत्यवीर शास्त्री ने की । दी गई कार्यसूची के अनुसार कार्यवाही सम्पन्न हुई । आरम्भ में दिवंगतों को श्रद्धाजंलि अर्पित की गई ।

सभा मंत्री प्रा. श्री अनिल शर्मा तथा कोषाध्यक्ष श्री यशपाल जानवानी ने गत वर्ष का आय व्यय विवरण प्रस्तुत किया । इसे अनुसूची 'क' में दिया गया है । इसी प्रकार वर्ष २०१४-१५ का आय व्ययक (बजट) भी प्रस्तुत किया गया । इसे अनुसूची 'ख' में देखा जा सकता है । इन्हें सर्व सम्मति से स्वीकार किया गया । सभा मंत्री जी द्वारा वर्ष भर के कार्यों की उपलब्धियों व वेदप्रचार के लिए गए अनेकों कार्यों का उल्लेख किया गया । तथा आर्य समाजों व सदस्यों द्वारा किए गए सहयोग के लिए धन्यवाद ज्ञापित किया । कार्यालय मंत्री श्री अशोक यादव ने न्यायालयीन प्रकरणों की जानकारी दी । आपने छत्तीसगढ़ में स्थित समस्त सम्पतियों सम्बधी विवादों का उल्लेख किया ।

नव गठित छत्तीसगढ़ आर्य प्रतिनिधि सभा के द्वारा वांछित सहयोग नहीं दिया जा रहा है । कई प्रकरण न्यायालयों में चल रहे हैं । हमारी सभा का दृष्टिकोण है कि न्यायालयों में प्रकरण ले जाने या गैर कानूनी कार्य सीधे करने से महर्षि दयानन्द के मिशन पर कलंक लगेगा । साथ ही आपसी तनाव भी बढ़ेगा । सार्वदेशिक सभा की गत बैठक में आपसी तालमेल करके समस्या सुलझाने का निर्णय किया गया है । उस सम्बंध में कार्यकारी चल रही है,

शेष भाग अगले पृष्ठ पर .....

---

९ मार्च २०१४ को विशेष समारोह में किया गया ।

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में गुरूकुल परली में आयोजित इस सम्मान समारोह में वैदिक विद्वान एड. प्रकाश आर्य (मंत्री, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा), डॉ. धर्मेंद्रकुमारजी शास्त्री (सचिव, दिल्ली संस्कृत अकादमी), पं. सुरेंद्रपालजी आर्य (आर्य उपदेशक, नागपुर), तपस्वी संन्यासी पू.स्वामी श्रद्धानन्दजी (प्रधान, महाराष्ट्र सभा, परली), पं. कपिल मुनिजी, दयाराम बसैय्ये, रामपाल लोहिया, उग्रसैन राठौर आदि उपस्थित थे । सर्वश्री पं. विश्वनाथजी शास्त्री (पिंपरी, पुणे), पं. राजवीरजी शास्त्री (सोलापूर), पं. सुधाकरजी शास्त्री (सभा उपदेशक), पं. दिनकरराव देशपांडे (गुंजोटी) इन पुरोहित पंडितों का शालवस्त्र, श्रीफल, पुष्पहार, स्मृतिचिन्ह एवं अभिनंदन पत्र देकर उपरोक्त विद्वानों के करकमलों से सम्मानित किया गया । समारोह में दिवंगत पुरोहित स्व. विश्वमित्रजी शास्त्री (हिसार) को भी मरणोपरान्त पुरस्कृत किया गया । इस अवसर पर सम्मानित पुरोहितों ने महर्षि दयानन्द की विचारधारा व वैदिक संस्कारों के प्रचार व प्रसार में अपना सर्वस्व न्यौछावर करने का संकल्प दोहराया तथा अपने जीवन के आजतक के अनुभवों को दर्शाया ।

प्रमुख अतिथिरूप विद्वानों ने पुरोहितों द्वारा समाज व राष्ट्र निर्माण कार्यों की आवश्यकता को महसूस करते हुए आनेवाले समय में आर्य समाज के पुरोहितों से ही सही अर्थो में जागृती कार्य हो सकेगा, यह आकांक्षा जताई । उन्होंने इस सम्मान कार्य हेतु महाराष्ट्र सभा को धन्यवाद दिए और यह प्रांतीय सभा अन्य सभाओं के लिए प्रेरणास्त्रोत बनें, यह अभिलाषा व्यक्त की ।

.....***.....

वरूण जलप्याऊ का उद्घाटन

यज्ञशाला के उद्घाटन के साथ ही श्रद्धानन्द गुरूकुल, परली के ब्रह्मचारियों एवं मुनिजनों के लिए जल की सुविधा हो, इस उद्देश्य से गुरूकुल के मध्यवर्ती स्थान पर वरूण जलप्याऊ का निर्माण किया गया है । लातुर के उपजिलाधीश डॉ. प्रतापजी सुग्रीव काले एवं सौ. ज्योत्सना काले द्वारा प्रदत्त ५१ हजार रूपयों की राशि से बने इस वरूण जलप्याऊ का उद्घाटन सामाजिक कार्यकर्त्री माता सौ.डॉ. विमलादेवी काले के करकमलों से सम्पन्न हुआ । इस अवसर पर उपरोक्त विद्वानों के साथ ही काले परिवार के सभी सदस्य उपस्थित थे । इस जलप्याऊ से गुरूकुल को बड़े पैमाने पर पीने के पानी की व्यवस्था हो चुकी है और भविष्य के जल की समस्या का स्थायी समाधान हो गया है ।

.....***.....

अतः इन्हीं आधारों हमारे पर प्रयास चल रहे हैं । सभा ने की जा रही कार्यवाही का अनुमोदन किया । अन्य विषयों में एक विषय आर्य समाज गिरीपेठ को सक्रिय बनाने के सम्बध में था । इस पर सभा पुस्तकाध्यक्ष श्री सन्तोष गुप्त ने बताया कि उक्त आर्य समाज मन्दिर का नकशा नगर पालिका द्वारा स्वीकार किया गया है । इस पर लगभग ६ लाख रूपये व्यय हो चुके हैं । आगे १० लाख रूपए लगेगें । आपने इसके लिए सबसे सहयोग की अपेक्षा की ।

श्री प. सुरेंद्रपाल जी ने बताया कि सभा के 'आर्य सेवक' का प्रकाशन लगातार हो रहा है । आपने आर्य समाजों एवं पदाधिकारियों से अपेक्षा की कि अपने-अपने क्षेत्र की आर्य समाज की गतिविधियों के समाचार तथा चित्र प्रकाशन के लिए अवश्य भिजवाएं जिससे सभा क्षेत्र तथा आर्यजगत को सूचना मिलती रहे ।

सभा के ध्यान में लाया गया कि अनेक आर्य समाजों के पदाधिकारियों द्वारा बताया गया के विवाहों होने तथा रिजवैशन न प्राप्त होने अतः भविष्य में शादियों के मौसम या गर्मी की छुट्टीयों में अधिवेशन न रखा जाए । पर्यात सूचना देकर ही बैठक रखी जाए । इस सुझाव के नोट किया गया ।

सभा उपप्रधान श्री हरिदत्त जी जुमड़े द्वारा प्रतिनिधियों को उनकी उपस्थिति के लिए धन्यवाद दिया गया तथा आर्य समाज हंसापुरी द्वारा आवास तथा भोजन की सराहनीय व्यवस्था के लिए आभार प्रगट किया गया । सभा अध्यक्ष द्वारा भी सबको धन्यवाद देते हुए अधिवेशन की समाप्ति की घोषणा की गई ।

.....***.....

संस्कारित बालकों ने पढे वेद-मंत्र

आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से शुद्ध आचरण दीक्षा समारोह का आयोजित

नागपुर । वर्तमान समय में भारतीय संस्कृति की शिक्षा हर बालक को देना देश हित में सबसे बड़ी आवश्यकंता है । उसी तरह पाश्चात्य सभ्यता के बढ़ते प्रभाव को रोकने की आवश्यकता भी है । ये विचार आर्य समाज, हंसापुरी में आठ दिवसीय 'बाल संस्कार व आर्य वीरदल शिविर' के समापन अवसर पर पं. कृष्णकुमार शास्त्री ने व्यक्त किए । उन्होंने युवाओं, बच्चों व परिवारों में शुद्ध आचरण, आध्यात्मिक विचार व सांस्कृतिक व्यवहार की स्थापना पर बल देते हुए भारतीय संस्कृति को अपनाने की सलाह दी ।

इस अवसर पर प्रमुखता से उपस्थित मंत्री अशोक यादव, कोष. संतोष गुप्ता ने मार्गदर्शन करते हुए बच्चों के सर्वांगीण विकास के लिए संस्कृति और संस्कारों की आवश्यकता दिए जाने पर पर बल दिया । कार्यक्रम में शिविरार्थी बच्चों ने पवित्र वेद-मंत्रों का पाठ कर उपस्थितों का भाव-विभोर कर दिया । शिविर का आयोजन आर्य प्रतिनिधि सभा मध्यप्रदेश व विदर्भ की ओर से किया गया था । शिविर में पं. सत्यवीर शास्त्री एवं सभा के मंत्री प्रा. अनिल शर्मा की प्रमुखता से उपस्थिति रहीं । यज्ञ के ब्रह्मा पं. सागरकुमार शास्त्री ने कार्यक्रम संपादित किया । शिविर में 45 बच्चों ने धर्म व संस्कृति की शिक्षा और शुद्ध आचरण की दीक्षा ग्रहण की । कार्यक्रम में अमरावती के रमेशपंत घोडस्कर, कारंजा लाड के रामसिंह ठाकुर, नांदुरा के यशपाल जानवानी, बेलखेड से शांतिलाल गोमाशे, नीमखेड बाजार के रामभाऊ बोचरे, परतवाड़ा के श्री जांबभुण आदि उपस्थित थे । सफलातार्थ हरिदत्त जुमड़े, रंगलाल प्रजापति, महिला मंडल की तेजस्विनी रिनके, जयम त्रिवेदी, रेखा जोग, संगीता यादव आदि ने अथक प्रयास किया । भारी संख्या में उपस्थिति रहीं ।

.....***.....

आर्य समाज, गोरखपुर, जबलपुर के तत्वावधान में महर्षि दयानन्द बोधोत्सव (शिवरात्रि पर्व) एवं १९०वाँ महर्षि दयानन्द जन्मोत्सव बड़ी धूमधाम से मनाया गया, जिसमें यज्ञ के ब्रह्मा आचार्य श्री सूर्यकांत 'सुमन'-पुरोहित आर्य समाज गोरखपुर, जबलपुर द्वारा चतुर्वेद शतकम् यज्ञ सम्पन्न कराया गया । ध्वजोत्तोलन श्रीमान् राजकुमार मेहता (पूर्व अध्यक्ष, नगर निगम, जबलपुर) द्वारा सम्पन्न हुआ । कार्यक्रम में मुख्य अतिथि एवं वक्ता आचार्य श्री वीरेन्द्र श्री शास्त्री, सहारनपुर (उ.प्र.) एवं अध्यक्षता डॉ. श्रीमती ईश्वर मुखी द्वारा की गई ।

अन्त में ऋषि लंगर हुआ जिसमें लोगों ने श्रद्धा से भाग लिया । आर्य समाज के पदाधिकारियों के अतिरिक्त नगर की अन्य आर्य समाजों के पदाधिकारी भी सम्मिलित हुए । कार्यक्रमों का संचालन समाज के मंत्री श्री प्रकाश चन्द्र सोनी द्वारा किया गया । आभार प्रदर्शन आर्य समाज के प्रधान श्री ब्रजमोहन नेहरा द्वारा किया ।

.....***.....

आर्य समाजों के निर्वाचन

आर्य समाज, दयानन्द भवन, नेपियर टाउन जबलपुर का वार्षिक निर्वाचन दि.४.५.१४ को सम्पन्न हुआ । पदाधिकारी आगे लिखे अनुसार निर्वाचित हुए -

प्रधान श्री जगदीश मित्र कुमार, मंत्री श्री एस.पी.मुखी तथा कोषाध्यक्ष श्री श्रवण कोचर ।

.....***.....

अनुसूची 'क'

आर्य प्रतिनिधि सभा मध्यप्रदेश व विदर्भ नागपुर आगम शोधन लेखा १ अप्रैल २०१३ से ३१ मार्च २०१४

आगम विवरण	राशि	..... विवरण	राशि
1) कार्यालय विभाग		1) कार्यालय विभाग	
दशांश	4780.00	वेतन कर्मचारी	1,92,567.00
सावधि निधि ब्याज	1,89,248.00	मार्गव्यय पदाधिकारी	4,799.00
बचत खाता ब्याज	16045.00	मार्गव्यय कर्मचारी	1,220.00
		अतिथी सत्कार	2,180.00
		डाकतार	2,430.00
		दूरभाष	5,921.00
		लेखन सामग्री	2,253.00
		बैंक सेवा शुल्क	80.00
		भविष्य निधि	2,823.00
		वाहन भत्ता	3240.00
		बोनस	4900.00
		विविध व्यय	1050.00
	2,10,073.00		**2,23,463.00**
2) वेद प्रचार विभाग, वेद प्रचार दान	1401.00	2) वेद प्रचार विभाग	
	1401.00		-
3) आर्य सेवक प्रकाशन आर्य सेवक शुल्क	21,750.00	3) आर्य सेवक प्रकाशन छपाई+डाक व्यय	48,050.00
4) वाचनालय रद्दी पेपर बिक्री	490.00	4) वाचनालय पत्र व त्रिकायें	1430.00
	490.00		**1430.00**
5) औषधालय	-	5) औषधालय अमरावती औषधालय व्यय	12410.00
			12410.00
6) अन्य भुसंम्पत्ति		6) अन्य भूसंम्पति	
अमरावती दूकानों से किराया	55,670.00	वेतन सेक्युरिटी गार्ड	36,121.00
		बिजली व्यय	22,576.00
		टैक्स	2322.00
		सहायता	500.00
		आयकर	3503.00
		भूसम्पत्ति अमरावती	51,600.00
		न्यायालयीन व्यय	5,000.00
	55,670.00		**1,21,622.00**

7) पूंजीगत मदें		7) पूंजीगत मदें	
अग्रिम जमा	19,043.00	अग्रिम नामे	19539.00
पुस्तक विक्रय	3,231.00	पुस्तिक क्रय	350.00
सावधिनिधि बैक से प्राप्त	468,494.00	आर्य समाज धरमपेठ (निर्माण)	584,023.00
आर्य समाज हंसापुरी	1,24,000.00		
आर्य समाज सदर	244,930.00		
स्व. नामदेवराव जुमठे स्मृति निधि	10,000.00		
	869,698.00		**603,912.00**
8) बैक शेष 1/4/2013		8) बैक शेष 31/3/2014	
इलाहाबाद बैक नागपुर	2,835.54	इलाहाबाद बैंक नागपुर	2950.54
सेन्ट्रल बैंक नागपुर	1,09,101.08	सेन्ट्रल बैंक नागपुर	196,147.08
पंजाब नेशनल बैंक नागपुर	2,28,149.15	पंजाब नेशलन बैंक अमरावती	29,7,009.15
इलाहाबाद बैंक दुर्ग	5,705.92	इलाहाबाद बैंक दुर्ग	5705.92
स्टेट बैंक रायपुर	1549.86	स्टेट बैंक रायपुर	1549.86
इलाहाबाद बैंक नागपुर	1800.00	इलाहाबाद बैंक नागपुर	1800.00
इलाहाबाद बैंक दुर्ग	3321.84	इलाहाबाद बैंक दुर्ग	3321.84
देना बैंक धमतरी	5271.80	देना बैंक धमतरी	5271.80
केनरा बैंक दुर्ग	5076.92	केनरा बैंक दुर्ग	5076.92
प्रगति बैंक दुर्ग	47,610.38	प्रगति बैंक दुर्ग	47610.38
देना बैंक टाटीबंद	10,318.50	देना बैंक टाटीबंद	10,300.00
प्रगति बैंक दुर्ग	29,300.00	प्रगति बैंक दुर्ग	29,300.00
पोस्ट ऑफीस नागपुर	88.79	पोस्ट ऑफीस नागपुर	88.79
प्रारंभिक शेष नगद	25,013.00	अंतिम शेष नगद	17187.00
योग	4,75,142.78	योग	6,23,337.78
क्र.1 से 7 का योग	11,59,082.00	क्र. 1 से 7 का योग	10,10,887.00
सर्वयोग	16,34,224.75	सर्वयोग	16,34,224.78

सत्यवीर शास्त्री
प्रधान

अनिल शर्मा
मंत्री

यशपाल जानवानी
कोषाध्यक्ष

आर्य प्रतिनिधि सभा मध्यप्रदेश व विदर्भ नागपुर

.....***.....

अनुसूची 'ख'

आर्य प्रतिनिधि सभा मध्यप्रदेश व विदर्भ नागपुर अनुयानित आय-व्ययक २०१४-१५

आगम विवरण	राशि	..... विवरण	राशि
1) कार्यालय विभाग		1) कार्यालय विभाग	
दशोख	70,000.00	वेतन कर्मचारी	2,10,000.00
सावधि निधि	2,00,000.00	मार्गव्यय पदाधिकारी	8,000,00
बचत खाता ब्याज	10,000.00	मार्गव्यय कर्मचारी	2,000.00
		डाकतार	3,000.00
		दूरभाष	6,000.00
		लेखन सामग्री	3,000.00
		भविष्य निधि	3,000.00
		अंकेक्षण शुल्क	12,000.00
		वाहन भत्ता	3,000.00
		बोनस	6,000.00
		विविध व्यय	2,000.00
	2,80,000.00		**2,58,00.00**
2) वेद प्रचार विभाग दान	10,000.00	2) वेद प्रचार विभाग प्रचार व्यय	73,000.00
3) आर्य सेवक प्रकाशन आर्य सेवक शुल्क	20,000.00	3) आर्य सेवक प्रकाशन छपाई+डाक खर्च	60,000.00
4) वाचनालय	–	4) वाचनालय पत्र त्रिकायें	2000.00
5) औषधालय	–	5) औषधालय अमरावती औषधालय व्यय	12,000.00
6) अन्य भूसंम्पति अमरावती किराया	70,000.00	6) अन्य भूसंम्पति भूसंम्पति अमरावती	50,000.00
		बिजली	35,000.00
		टैक्स	15,000.00
		आयकर	10,000.00
		न्यायालयीन व्यय	10,000.00
	70,000.00		**1,20,000.00**
7) पूंजिगत मदें		7) पूंजिगत मदें	
अग्रिम जमा	20,000.00	अग्रिम नामे	30,000.00
पुस्तक विक्रय	5,000.00	पुस्तक क्रय	10,000.00
आर्य समाज हंसापुरी	140,000.00	सावधि निधि बैक में जमा	2,00,000.00
आर्य समाज सदर	2,20.000.00		
सर्वयोग	**7,65,000.00**	**सर्वयोग**	**7,65,000.00**

सत्यवीर शास्त्री
प्रधान

अनिल शर्मा
मंत्री

यशपाल जानवानी
कोषाध्यक्ष

आर्य प्रतिनिधि सभा मध्यप्रदेश व विदर्भ नागपुर

.....***.....

आर्य समाज, सदर नागपुर में होली मिलन

होली मिलन के अवसर पर लिया गया चित्र

आर्य समाज, सदर नागपुर में संक्रांति पर्व

आयोजित बाल संस्कारव आर्य वीर दल शिविर का एक चित्र

चित्र सम्बंधी समाचार कृपया पृष्ठ १८ पर देखें।

आर्य सेवक, नागपुर

प्रति, _____

_____

महर्षि याज्ञवल्क्य यज्ञ शाला के उद्घाटन के समाचार कृपया पृष्ठ २१ पर देखें

कन्या गुरूकुल, देहरादून में नवीन प्रवेश हेतु सूचना

कन्या गुरूकुल महाविद्यालय, देहरादून, गुरूकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार की अंगभूत संस्था है । यह अनिवार्य रूप से छात्रावास पद्धति पर चलने वाला गुरूकुल है । प्राथमिक शाला से इन्टरमीडियेट एवं विद्यालंकार एवं एम.ए. तक की शिक्षा का समुचित प्रबंध है । बी.बी.ए., एम.बी.ए., कामर्स, मनोविज्ञान आदि के शिक्षण की समुचित व्यवस्था है । शिक्षा निशुल्क है केवल छात्रावास व भोजन व्यय लिया जाता है । १५/४/१४ से प्रवेश प्रारंभ हो गये हैं । प्रवेश हेतु ५००+५० रूपये भेज कर नियमावलि मंगवाएं ।

श्रीमति सविता आनन्द
६०, राजपुर रोड, देहरादून, उत्तराखंड

प्रकाशक : प्रा. अनिल शर्मा, प्रबंधक संपादक एवं मंत्री आर्य प्रतिनिधि सभा,
मध्यप्रदेश व विदर्भ, नागपुर, फोन: 0712–2595556 द्वारा
उक्त सभा के लिए प्रकाशित एवं प्रसारित
मुद्रक : आर्य प्रिंटिंग प्रेस, जबलपुर, फोन : 0761–4035487